

श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ ॐ नमो देव निर्गुण ॥ ह्यणो पाहे तव नदेखे गुण ॥ गुणे विण निर्गुणपण ॥ सर्वथा
 जाण घडेना ॥ १ ॥ सर्वथान घडे निर्गुणपण ॥ तरि घडेने दिशी सगुणपण ॥ नातळसी गुणागुण ॥ अगुणाचा
 पूर्णगुरूसाया ॥ २ ॥ अगुणाचा चीपरितू गुणी ॥ करि सी निर्गुण गुणाशाडणी ॥ पंचभूतापासुनि ॥ सोडविता जनि
 जनार्दन ॥ ३ ॥ ज्याचे निजनासी अर्दन ॥ ज्याचे नितो गेदे ह्मर्दन ॥ जो जीवासी जीवे मारि पूर्ण ॥ तो कृपाकुंजना
 र्दन घडेकेवि ॥ ४ ॥ जनार्दनाचे कृपाकुपण ॥ सर्वथानेणतिजन ॥ नेणावयो हेचिकारण ॥ जो दहाभीमानन सोडिति ॥
 ॥ ५ ॥ जननी अठरि जन्मजाण ॥ त्या जन्मास वल्लणति जन ॥ त्या जन्म जन्मा करि मर्दन ॥ या त्यागी जनार्दन नाम त्यासी ॥
 ॥ ६ ॥ मरण मारुनि वाढ विजीणे ॥ जीव मारुनि जीववणे ॥ हेनां दिवि विदेहपणे ॥ ऐसी जनार्दन कृपा किजे ॥ ७ ॥ निजभावाथ
 परिपूर्ण ॥ एकाकि देखोनियादीन ॥ कृपा करि जनार्दन ॥ कृपाळू पूर्णदिनाचा ॥ ८ ॥ जेजे भावना भावि जन ॥ तेते पूर्वी जनार्दन
 ॥ जो मोगे परम समाधान ॥ त्याचा देहाभीमान निदर्शनी ॥ ९ ॥ होका जनार्दना समोर ॥ कै आलाहोता अहंकार ॥ माते नेघेउनि
 वाशस्त्र ॥ करि शतचूर्णनिजांगे ॥ १० ॥ जे विसूर्याचे निउ जीयेडे ॥ आंधारसी रात्रीउडे ॥ तेवि जनार्दन नामा पुढे ॥ अहंकार
 वापुडे उरेजेवि ॥ ११ ॥ एकतागुरू नामाचा गजर ॥ समूळ उरे अहंकार ॥ यथदुःखदायक संसार ॥ कैसे निधीरुधरित ॥ १२ ॥ ज्या
 चे नाम स्मरता आवडी ॥ ससारबांदव डीफोडी ॥ जीवाचे जीवबंध सोडी ॥ नामाचि जोडी लाज विमोक्षा ॥ १३ ॥ निजमोक्षा ही
 वरते ॥ ज्याचे नाम करि सरते ॥ त्याच्या कृपाकुपणाते ॥ केवि म्यायथ सांगेव ॥ १४ ॥ नामप्रतापान करे वरीमा ॥ त्यास दुःखानि
 जमहीमा ॥ कैश्यापरि अकळे आम्हा ॥ काय निरुपमा उपमावे ॥ १५ ॥ अगाध किति गुरुचि गहण ॥ गुणगणीता अनंतगुण ॥
 कायध्यावे त्याचे आपण ॥ नित्य निर्गुणनिजांगे ॥ १६ ॥ धावघेउनि त्यापे जावो ॥ तव त्या नाही गावरावो ॥ त्याचे प्राप्तीसी नचले उप
 बो ॥ एकस द्वाव वाचुनि ॥ १७ ॥ सद्गोवे स्मरता नामासी ॥ गुरुप्रगटे स्मरणापासी ॥ जे विसागरसेंधवासी ॥ येभ्रंहीसी निजां
 गे ॥ १८ ॥ सागरादेता अंतीगण ॥ जे विसैंधव होय जीवण ॥ ते विवंदिता श्रीगुरुचरण ॥ प्रीतुपण हरे ॥ १९ ॥ सुदुःखपाशाटनी

या पूर्ण ॥ जनचिह्नो यजनार्दन ॥ ते का जन व न वि जन ॥ श्री नमो न्नभासेना ॥ २० ॥ जेने ते चि जनार्दन ॥ जनार्दन
चि सकळ जन ॥ हे चि उ पनिषत्सार पूर्ण ॥ हे निजखुण जनार्दनी ॥ २१ ॥ यणे चि अत्रि नार्थ यथ ॥ सांख्य बो ली ला भ गं व त ॥
उत्पत्ति स्थिति प्रक या त ॥ वस्तु संदो दिते संपूर्ण ॥ २२ ॥ सांख्ये को नि या उ ध वो ॥ वि च्या रि आ पु ट्वा आ श्री प्रा वो ॥ संसार वा ट्
की जो अहं भा वो ॥ तो आव श पा हा हो सां डा वा ॥ २३ ॥ अं ह का र ज ड त्वा चि ता ॥ तो सां डी ता न व चे सर्व धा ॥ हे पु सो अ रि श्री कृ णा
ना था ॥ ते णे सां ख्य था अ र्थ नि रू प णे ॥ २४ ॥ सकळ प्रा णी चां आ श्री प्रा वो ॥ सां ख्य अनु ना द ला दे वो ॥ आव श सां डी ला अं हं भा वो
हे चि पा हा हो ट् ट के ले ॥ २५ ॥ मा शे नि प रा क मे त त्वा ॥ मा शे मी प ण न व चे सर्व धा ॥ ला जी र वा णे कृ णा ना था ॥ की ति आ ता पु सा व
॥ २६ ॥ ऐ वी उ ध वा चे चि ता ॥ कु कु सर ती श्री कृ णा ना था ॥ बा प कृ पा कु नि ज भ ता ॥ ते णे नि वा रे अं हं ता ॥ ते नि ज सर्व सां गे ॥ २७
॥ आ जी उ द्वा चे भा ग्य पूर्ण ॥ ज गी उ द्वा चि ध न्य ध न्य ॥ ज्या सी स दा सं तु ल्य श्री कृ णा ॥ न क रि तां प्र श्ना नि ज गु ह्य सां गे ॥ २८
वां क क का य भु क सां गे ॥ म ग मा ता स्त न दे उ त्सां गे ॥ ते क क व क या चे पां गे ॥ धा वो नि नि जा गे स्त न पा ण चा ली ॥ २९ ॥ ला ह नि अ ति अ
गळ ॥ कृ णा उ ध व क क व का ॥ तो स्व भ का चि भ ज न क का ॥ ज णो नि जी का का पो री त ॥ ३० ॥ वा क क ने णे अ पु ली चि
ता ॥ परि मा ता प्र व र्ते त्या च्या ही ता ॥ ते वि उ द्वा चे नि ज सार्था ॥ श्री कृ णा ना था क क व का ॥ ३१ ॥ त्या उ द्वा चे जे जे
न्यु न्य ॥ ते ते क रा व या परि पूर्ण ॥ प्र व र्त ता से श्री कृ णा ॥ तो नि ज नि र्गु ण उ प दे शी ॥ ३२ ॥ पंच वि सा वे आ ध्या यी जा ण ॥ सा
गो नि गु णो ज य त क्ष ण ॥ त्व क्ष वि त क्ष नि ज नि र्गु ण ॥ हे चि नि रू प ण नि ज नि ष्ठा ॥ ३३ ॥ प्र कृ ति पुरु ष वि वे क ॥ क्षा ती या
ही बु द्धी पूर्व क ॥ ज र गु ण ज यो ना ही नि सं क ॥ त व वा धी क र व दुः ख अं हं भा वो ॥ ३४ ॥ ती ही गु ण स व दे ह जा ला ॥
हे गु ण ज यो न व चे के ला ॥ मूळ उ च्छ र्द आ पु ट्वा ॥ न क र वे व ही ला को णा सी ॥ ३५ ॥ दा डा ज न्य ता वृ क्ष जा ति सी ॥ तो मि
ळो नि था कु रा णी सी ॥ स मूळ छे द वि र श्वा सी ॥ ते वि वि वे का सी स त्व गु ण ॥ ३६ ॥ वि वे का मि न त्मा स त्व गु ण ॥ स मूळ
उ च्छे दि ति नि गु ण ॥ स ह जे प्र गे टे नि ज नि र्गु ण ॥ ते हा गु ण छे द न ते मि थ्या ॥ ३७ ॥ स मूळ मि थ्या ति नि गु ण ॥ नि त्य स त्व
नि ज नि र्गु ण ॥ ये चि अ र्थि चे नि रू प ण ॥ स्व मु खे श्री कृ णा सां ग त ॥ ३८ ॥ ॥ ॥ श्लोक ॥ श्री भ ग व नु वा च

॥ गु णा ना ग स मि श्रा णं पु कान्ये न य था भ वे त् ॥ त न्मे पुरु ष व र्ये द्मु प धार य शं स तः ॥ ३९ ॥ ॥ टी का ॥

ज्याचे निचरणे पवित्रक्षीति ॥ नामे उद्धरे श्रीजगती ॥ ज्याची एकता गुणकीर्ती ॥ क्षयो पावती म हा पापे ॥
 ॥३९॥ ज्याचे मूढ मधुर अविट नाम ॥ उच्चारिता निक्की परम ॥ ते उद्धवासी पुरुषोत्तम ॥ आवडी परम बो लत
 ॥४०॥ सत्वरजतमतीनी गुण ॥ नमी सकता भी न भिन्न ॥ पुरुषापासी एकेक गुण ॥ उपजवि चीकृत एका
 ॥४१॥ निःसंदेह सावधान ॥ निर्विकल्पी करुनि मन ॥ एकता मासे वचन ॥ पुरुषोत्तम पूर्ण होई जे स्वये ॥ ४२
 मासे स्वरूपी सद्भावता ॥ ते पुरुषा चि उन्नत मोरया ॥ मासे वच नि विश्वासता ॥ पुरुषत मता धर रिघे ॥ ४३ ॥ ऐशी उन्नत मा अ
 ती उन्नत म ॥ निर्गुण पदवि निरूपण ॥ तुजमी अपितसे पुरुषोत्तम ॥ मासे वचन परम विश्वात्मा ॥ ४४ ॥ भक्ती भावार्थ पर
 म श्रेष्ठ ॥ वचन विश्वासी अतिवरिष्ट ॥ यात्मागी उद्धारी पुरुष श्रेष्ठ ॥ स्वमुखे वैकुण्ठ सवोधी ॥ ४५ ॥ संसारियोनि अनेक ॥
 त्या मा जी मनुष्य लयो निचांग ॥ हे ही अविकळ अयंग ॥ सपूर्ण सांग निरुद्ध ॥ ४६ ॥ सकळ देहा मा जी जाण ॥ ऐसे पु
 रुष देह प्राधान्य ॥ त्या ही मा जी विवेक संपन्न ॥ वेदशास्त्रज्ञ मुमुक्षु ॥ ४७ ॥ वेदशास्त्र विवेक संपन्न ॥ त्या ही मा जी ज्या मासे
 भजन ॥ भजत्या मा जी अनन्य शरण ॥ सर्वस्वे जाण मजलागी ॥ ४८ ॥ सर्वस्वे अनन्य शरण ॥ तेथ मा सी कृपा परिपूर्ण ॥ मासे
 कृपे मा ही ज्ञान ॥ पावोनि संपन्न मद्भजनि ॥ ४९ ॥ ये ही गुणी विचारिता लोक ॥ अधीला दिसे उद्धव ऐक ॥ त्यात्मागी यदु नायक
 पुरुष वयो भिषक वचने करि ॥ ५० ॥ ऐसे संवो धोनि उद्धवासी ॥ श्रीगुण गुण स्वभावासी ॥ सांगता प्रथम सत्वासी ॥ त्वीके
 री उपपादी ॥ ५१ ॥ उदंड सत्वाची लक्षणे ॥ त्यात पंधरा बौली ले श्रीकृष्ण ॥ तेचि ऐ काकोण कोणे ॥ निज निरूपणे हारि सोगे ॥

व

५२ ॥ श्लोक ॥ वामोदमेति ति शेषा तपः सत्यं दया स्मृतिः ॥ तुष्टि स्था गोः स्पृहा मद्वा क्रीर्दयादिः स्वनिर्दृतिः ॥ २ ॥
 टीका ॥ उमापुत्री जेचि न वृत्ति ॥ सांडुनि वास्य स्मृति ॥ अं खड राखणे अत्मारिथि ॥ राम निश्चीति त्या नाव ॥ ५३ ॥ वास्य द
 रीया चि चर फडी ॥ रामे रीकरा वि गळ जोडी ॥ निग्रहणे विषय चाडी ॥ ५४ ॥ माचे कोउ त्या नाव ॥ ५५ ॥ जेणे हरि से साहाणे सु
 रव ॥ त्याचि वृत्ति साहाणे दुःख ॥ तीति शायाना वेदख ॥ कडू सहात्मक उद्धवा ॥ ५५ ॥ मीकोण कैचा की मात्मक ॥ नीकर्म किंक
 र्म बद्धक ॥ करणे निजा त्मविवेक ॥ ईशा परिपाक या नाव ॥ ५६ ॥ जागृति स्वल्प सुषुप्त्य अता ॥ भगवत्प्रापीला गीचि त ॥
 सूरनि मा जी पडे नित्य ॥ तपनि श्चीत या नाव ॥ ५७ ॥ आवडी जेवी न घेव विष ॥ ते वि प्राणा ते न कोले लहिके ॥ साच चि बोले
 णे निश्चक ॥ हे सत्य देव सावीक ॥ ५८ ॥ भूतावरिक ही नपण ॥ जो स्वप्नी न देखे आपण ॥ भूत द्या ते संपूर्ण ॥ उद्धवा जाण निश्चीत ॥ ५९

मासा मुख्यनिज स्वार्थकोण ॥ मीकायकरितो कर्मचरण ॥ ऐसजे पूर्वानुस्मरण ॥ स्मृति जाणयानाव ॥ ६० ॥ न करि
 ता अति अरा अठि ॥ यथात्ममे करी पोठी ॥ यानाव सुखसंतुष्टी ॥ जाणजे गजेरी उडुवा ॥ ६१ ॥ जे मीळले जीविकाभाग ॥ त्यात
 हीसत्प्राचीदानयोग ॥ विषयममतासांडणे सांग ॥ त्यानाव त्याग उडुवा ॥ ६२ ॥ अर्थस्वाधी हत्काचेठे ॥ अर्थजोडता अधीकवोठे
 ॥ तेइत्सासांडने निजनिवोडे ॥ तेनिस्पृताघडे तेरायी ॥ ६३ ॥ जेधनिस्पृहामूळसांग ॥ त्याचिनावदुठवैराग्य ॥ हेपरमार्थाचे
 मीजभागे ॥ येणे श्रीरंगसापेडे ॥ ६४ ॥ जोगुरुवा क्यविश्वासी ॥ सबाह्यविकला सर्वसर्वस्वसी ॥ तोचिभावार्थ ही जदेवासी ॥
 श्रद्धावापासीसमूळनांदे ॥ ६५ ॥ नरदेही लागेपरकला ॥ तदर्थकरुनिसेकर्म ॥ विषयार्थकरि धर्मधर्म ॥ तेठज्यापरम
 अतिनिव्य ॥ ६६ ॥ जेणेदुःखीहाइजेआपणे ॥ तेपुढीलासीनाहीकरणे ॥ दुःखनेदुनिस्वरुदेणे ॥ हेदया मीम्रीकृष्णेवदीजे
 ॥ ६७ ॥ पुढीलासीनेदुनिदुःख ॥ सर्वभूतमात्रीदेणेसुख ॥ हेचिदयापरमार्थिके ॥ दुसरियादेखयालागीसांग ॥ ६८ ॥ ववाताना
 वेदेपुढेपेडीजैसी ॥ तेसेगीणदेखानिविषयासी ॥ जेविनटलाब्रह्मसुखासी ॥ स्वनिवृत्तियासीवोलीजे ॥ ६९ ॥ रंकरवैसत्मा
 पाळखीसी ॥ उपेक्षीपुर्विलसुडक्यासी ॥ तेविउपेक्षनिविषयासी ॥ जेब्रह्मसुखासीपडकला ॥ ७० ॥ कणाचिवाढीभूसापासी
 कणनिडोरभूसेसी ॥ तोकणयावयाहातासी ॥ सांडीतिभ्रसासीपाखडुनि ॥ ७१ ॥ तेविब्रह्मसुखाचियेपोडे ॥ नरदेहाचापाग
 रापेडे ॥ तेब्रह्मसुखजेहाताचेठे ॥ तेदेहनावेदेविविषयसुख ॥ ७२ ॥ तेविसांडुनिविषयप्रीति ॥ ज्यासीब्रह्मसुखीसुखप्राप्ती
 याचिनावस्यनिवृत्ति ॥ जाणनिश्चीतिउडुवा ॥ ७३ ॥ यापंधरातक्षणाचिस्थीति ॥ वर्तेतो शुद्धसत्वमूर्ति ॥ शोधितसत्वाचिस
 त्ववृत्ति ॥ अदिपदे श्रीपतिसांगत ॥ ७४ ॥ सर्वभूतिअकृत्रिमता ॥ देखेभेद्रावेतत्वता ॥ यानावशोधितसत्वता ॥ गुणावस्थ्यादेदका
 ॥ ७५ ॥ ऐशीयापरिसत्वगुण ॥ सात्वीकापासीवर्तेपूर्ण ॥ अतारजाचेतक्षण ॥ स्वयश्रीकृष्णसोगत ॥ ७६ ॥ ॥ श्रोक ॥ कामई
 कामदस्तृष्ठास्तभआशीभिदासुख ॥ मदेत्साहोयराःप्रीती ॥ हास्यंबलोद्यमः ॥ ७७ ॥ ॥ टीका ॥ कामगुणजेविषयशोषु ॥
 जेविइंधनिवाठेरुतांशु ॥ तेविपुरविताकामाभीळासु ॥ कामअसौसुपैवाठे ॥ ७८ ॥ याबावकामजाण ॥ कामत्रीया
 तेईहापूर्ण ॥ सात्वावियेचोप्रमाण ॥ मंदचेतक्षणयानाव ॥ ७९ ॥ सात्वीयाअगर्थप्राप्ती ॥ वासनेसीनके श्रुती ॥ चाळतिवाळतिअ
 आरसुती ॥ तृष्णानिश्चीतियानाव ॥ ८० ॥ अतिगर्वजेसाग्रता ॥ कोणादहीनआणिसर्वथा ॥ यानावसत्थाआवस्था ॥ जाणतत्व
 ताउडुवा ॥ ८१ ॥ अर्थप्राप्तीकारणे ॥ ईष्टदेवताप्रार्थने ॥ प्रपंचिखमागमे ॥ आशाह्रणेणयानाव ॥ ८२ ॥ भिदासुणजेमे

दर्प

ग

क२

दुजाण ॥ स्फुरद्रूपप्रपंचभाण ॥ मासे तुसे प्रपंचवन ॥ भिदाळ क्षणयानाव ॥ ८२ ॥ राजसकृत्वाचानव माग ॥
 विषयसुखभोगजोसांग ॥ तेचिसुखमानिति वांग ॥ सुखप्रयोगयानाव ॥ ८३ ॥ रणीउत्साहशूरासी ॥ कापुत्रोत्साह
 नरासी ॥ विवाहोउत्साहदासी ॥ मोहोत्साहत्यासीवाकीजे ॥ ८४ ॥ शास्त्रेवेवादिजयोयेणे ॥ कायुद्धिशुरपराभवेने
 ॥ तेणेख्यातिवाढवने ॥ यत्रामिरवणेयानाव ॥ ८५ ॥ वदिजनाहतिकीति ॥ स्वयेवाणीदिगती ॥ यानावयत्राप्राली ॥ जा
 णनिश्चीतिउद्धवा ॥ ८६ ॥ ऐकोनिवचमौलिछेदबद ॥ उपहासीअतिविनोद ॥ तेथराजसाहास्यविषद ॥ जाणप्रसीद्धु
 द्वा ॥ ८७ ॥ वीर्यटप्राणीजेकवळ ॥ बळाळ्यताअतिप्रबळ ॥ दाखवणेत्रारिरबळ ॥ यानावशीळवियचि ॥ ८८ ॥ राजबळे
 उद्यमवेवहार ॥ उभोगदागवयाजोव्यापार ॥ न्यायसांडुनिस्यार्थकार ॥ बळोद्यमप्रकारयानाव ॥ ८९ ॥ हीपधराहीलक्षणे
 ज्यापेनांदति सपूर्ण ॥ तेराजसवोळखणे ॥ जीवेप्राणेनिश्चीत ॥ ९० ॥ केवळअविवेकसंपत्ति ॥ तामसाचितमोहति ॥ सोळा
 लक्षणेत्याचिस्थीति ॥ ऐकनुजप्रतिसांगेन ॥ ९१ ॥

नो

॥ श्लोक ॥ कोधात्मोभाः नृतेहिसायाश्चात्मः कुमक
 लिः ॥ श्लोकमोहोतैमैसो विषादातीनिद्रात्राभीरनुद्यम ॥ ९१ ॥

॥ टीका ॥ कोधकामादिअपूर्णआवस्था ॥ तो
 भ्रष्टणजेअतिक्रुपणता ॥ अनृत्यघ्नणजेअसत्यता ॥ हीसोत्तत्वतापरपिडा ॥ ९२ ॥ यांच्याघ्नणजेत्कोलगत ॥ दंभघ्नणजे
 लोळगता ॥ कुमनामेअतिअयासता ॥ व्यर्थकलहताकलीजाण ॥ ९३ ॥ श्लोकघ्नणजेअहकार ॥ मोहोमूणजेमोहाचापुरु ॥
 विषादघ्नणजेदुःसंसार ॥ अश्र्यंतरूजेणेपोळ ॥ ९४ ॥ अतिघ्नणजेअतिसंताप ॥ निद्राघ्नणजेअसदारोप ॥ अशाघ्नणजेअ
 तित्वाल्प ॥ महाभयकंपभीशब्दी ॥ ९५ ॥ ऐकनिद्रेचेनिजवर्म ॥ जेअळसाचेनिजधाम ॥ जाज्यतामोलीवपरम ॥ तेनिःसिम
 तामसी ॥ ९६ ॥ सांडुनिपासर्वकर्म ॥ रतबृतासोहपरम ॥ यानावअनुद्यम ॥ कखावलेत्तमतेरायीवसे ॥ ९७ ॥ यात
 मोगुणाच्यासाळा ॥ ज्याचेअंगीबाणतिसकळा ॥ तोतमोरात्रीचाचंद्रकाळा ॥ विवेकअंधळातामरु ॥ ९८ ॥ सत्वरजतमो
 गुण ॥ याचेवोळखीलागीजाण ॥ कलेभीवभिन्ननिरूपण ॥ आतामिश्रलक्षणतेऐक ॥ ९९ ॥

॥ श्लोक ॥ सत्वस्य
 रजसश्चैतास्तमसश्चतुर्विधाः ॥ इत्येवैवर्णितप्रायाः सन्निपातमथो शृणु ॥ १०० ॥ ॥ टीका ॥ सांगीतकीत्रीगु
 णस्थीति ॥ त्याएकच्याअनेंतवृत्ति ॥ त्याहीअनेत्तप्रायहाति ॥ जीवासीगुणगुंथीयेथेचिपडे ॥ १०० ॥ मस्तकीकेशचिकर
 लेहोति ॥ तेज्याचेत्यानुगवति ॥ तेवित्रीगुणाचिगुणगुंति ॥ जीवाहातिउगवेना ॥ १०१ ॥ मिळोमिसख्यामायवहीणि ॥

लातिघेउ निते लफणी ॥ नुगेव चिकटत्मा केशश्रेणि ॥ तेविश्रीगुणाचिवेणीजीवासी ॥ २ ॥ त्रिगुणाचि
 विभागवृत्ति ॥ जीवसामर्थ्यजरिहोति ॥ तरिशुद्धसत्की करुनिवस्ति ॥ गुणातिनि प्रवेश ॥ ३ ॥ ऐसानिजगु
 णाचाउगवो ॥ जीवाचेनि नके नि वही ॥ यात्मागीगुरुचरणिसद्भाव ॥ सभाग्यपात्रहो राखीति ॥ ४ ॥ जेसभा
 ग्यभाग्यवतजनि ॥ ज्यासीसद्गुरुसखीजननी ॥ विवेकवैराग्यघेउनिफणि ॥ जोश्रीगुणाचिवेणीउगवितु ॥ ५ ॥
 ज्याचिउगवतीगुणगुति ॥ पुढतिगुंतिपडेमागुति ॥ यात्मागीतोमहाप्रति ॥ मुंडेनि साडीति राखासी ॥ ६ ॥ एका
 वीजवल्गति ॥ उद्भटवैराग्याचिस्थिति ॥ गुतिउगवायानरिषति ॥ मुळीचीमुडीतिसमूळ ॥ ७ ॥ विवेकफणिचेनिमैळे ॥ वो
 ढीतावैराग्यासीबळे ॥ जोअत्राक्तभावबळे ॥ तोमध्यचीपळेउदुनि ॥ ८ ॥ अराक्तपळतादेसुनिदुरि ॥ एकलपालीमोह
 आंधारि ॥ एकेगुंतिराखोनिशीरि ॥ गुंतिमाक्षारिरिघाळे ॥ ९ ॥ एकेकरैटेअत्येति ॥ नकेचिगुरुमागुतीचिभेटि ॥ ऐसेसं
 सारिपोरैपोरदि ॥ गुणदुःखकोटिभोगीति ॥ १० ॥ द्विपराद्दियुविधाता ॥ खाचेनिनोहेगुणभागवता ॥ माइतराचिकोणकथा ॥
 गुणतत्वतानिवडावया ॥ ११ ॥ ऐत्रीयाज्याचिगुणवृत्ति ॥ मजहिनिःशेषननिवडुति ॥ यात्मागीध्वनितप्रायपदाक्ती ॥ देवश्लोका
 र्थीबोलीता ॥ १२ ॥ मागीत्मानिश्लोकार्थी ॥ सागीनत्माश्रीगुणस्थीति ॥ श्रीगुणाचिमिश्रीतगति ॥ सन्नीपातवृत्तिलेखका ॥
 १३ ॥ ॥ श्लोक ॥ गुणसन्निपातस्तहमिति ममेत्युद्धवयाप्रति ॥ व्यहारसन्निपातो मनोमात्रे द्विया कृपिः
 ॥ १४ ॥ ॥ टीका ॥ गुणसन्निपातप्रकार ॥ एकचिजोअंहकार ॥ तोगुणसंगेत्रीप्रकार ॥ एकचिच्यारुतयाचा
 १४ ॥ वर्णश्रमविहीतवित्वास ॥ वेदाज्ञापाळणेअवशा ॥ श्रीआत्माजाणचिदंश ॥ हाअहंविदाससात्कीक ॥ १५ ॥
 श्रीस्वधर्मकर्मकर्ता ॥ श्रीस्वर्गादिस्वभोक्ता ॥ मजपावतिनामावस्था ॥ यानावभावस्थाराजस ॥ १६ ॥ श्रीदेहधारिस्त
 भठनर ॥ श्रीविकर्ताशत्रुसंहार ॥ श्रीसर्वार्थीअतिदुर्धर ॥ हाअहंकारतामस ॥ १७ ॥ गुणानुसारेममताजाण ॥ त्रिवि
 धरूपेस्फुरेस्फुरण ॥ तेचिअर्थीचेनिरूपण ॥ विषदश्रीकृष्णासोगत ॥ १८ ॥ प्रासेहृददवाशगंवत ॥ तोचिसर्वभूतिददयस्प
 १८ ॥ तेमासीचसमस्त ॥ हेममताज्ञोधीतसत्वाचि ॥ १९ ॥ भक्तसंतसाधुसज्जन ॥ तेचिमाझेसुदुज्जन ॥ ऐसीजेममतापूर्ण
 उद्धवाजाणसत्वस्थ ॥ २० ॥ जीवाहनपरति ॥ सुदुरुचरणीअतिप्रोति ॥ ऐसीममतेचिजेजाति ॥ तेजाणनिश्रीतिसेली
 क ॥ २१ ॥ ज्यादेराचिउपासकता ॥ श्रीवैष्णवदिक्षितता ॥ देविधर्मपूर्णममता ॥ तेजाणसात्कीकतासत्वस्थ ॥ २२ ॥

रौकी वैष्णवि धर्म ममता ॥ देभरहित निष्कामता ॥ ते ते सात्विक ममता ॥ एक अवस्था राजसाचि ॥ २३ ॥ निश्चिन्ता
 मानिकिका ॥ सत्य साचार त्मोकीक ॥ लोकेषणे चिममता देख ॥ ते अवशक राजसी ॥ २४ ॥ प्रवृत्ति शास्त्री उभावडी ॥
 लोकीकाचि अति गोडी ॥ नामरूपाची उभविगुडी ॥ हे ममता रोक डी राजसा ॥ २५ ॥ स्त्री पुत्रे माजी अवशक शरीर
 समधी अत्यत्मो क ॥ द्रव्याचिममता निष्ठे क ॥ हे बुधी वोळख राजसा ॥ २६ ॥ ज्यादे वाचिकरिता भक्ती ॥ नामरूपे जोडे
 संपत्ती ॥ ती ति देवे ते आवड ति ॥ हे ममता प्रिंता निश्चीति राजसा ॥ २७ ॥ काम्य कर्मे उभावडी देख ॥ आत्मानी सकाम कर्मक
 सत्य स्वर्गादिविषय सुख ॥ हे ममतानिष्ठे कर राजसा ॥ २८ ॥ हे रजोगुणाचिममता ॥ तु जन्म्यासांगी तत्की तत्वता ॥ तमोगुणाचिजे
 उभावस्था ॥ एक व्यवस्था सांगेन ॥ २९ ॥ आपुत्मादे हासी जो हू तु करि ॥ कापूर्वा पूर्व पूर्व ज्याचा वैरि ॥ त्याच्याले करासी वैर धरि
 हे बुधी निष्ठुरिता मस ॥ ३० ॥ पुढे ले कराचे ले करि ॥ रति भूमी जीविके वरि ॥ आडवायई त स्व गोत्री ॥ त्यासि वैर धरीता मस ॥
 ३१ ॥ ऐसे पूर्वापरमासे वैरि ॥ मिनिर्दाकीन संसारि ॥ यात्मागीरिचे उभी च्यारि ॥ ते ममता खरिता मस ॥ ३२ ॥ अभी च्यारिक
 रिजे मंत्रज्ञ ॥ ते मानि मासे स्व जन ॥ शाकीनि डाकीनि उपासन ॥ हे ममता पूर्णता मसी ॥ ३३ ॥ असो बहुसात वित्ति एके क गुणे
 अनंत वाक्ति ॥ हे ति निजे थमि श्र हो ति ॥ सन्नीपात वृत्ती यानावा ॥ ३४ ॥ कफ वात आणि पित्त ॥ ती नि एकत्र जेथ होत ॥ जेथ उपजे स
 न्नीपात ॥ ते वि सन्नीपात येथ श्री गुणाचा ॥ ३५ ॥ सकल वित्त्वात्मक मन ॥ पंचविषय पंच प्राण ॥ दो दो रिची वैकार सपूर्ण ॥ ते
 थ उपजे श्री गुण सन्नीपात ॥ ३६ ॥ ते चि सन्नीपात निरूपण त्रिगुणाचे मिश्र लक्षण ॥ स्वयसागता हे श्री कृष्ण ॥ मी
 श्र गुण सन्नीपात ॥ ३७ ॥ ॥ श्लोक ॥ धर्म चार्थे च कामे च यदासौ परिनिष्ठितः ॥ गुणानां सन्नि
 कर्षेयं श्रद्धा ति धनानहः ॥ ॥ टीका ॥ पुरुषाच्या गयी क्रीया कर्म ॥ क्षणे स्वधर्म क्षणे काम ॥ क्षणे वाटु वि उर्थो
 धर्म ॥ हा सक्रमण श्री गुणाचा ॥ ३८ ॥ गुण सक्रमण करिल काय ॥ त्रिगुणि धर्म श्री विधे होय ॥ काम ही श्री विध
 हो उनि टाय ॥ अर्थ स्वार्थ निर्वाहा त्रिगुणात्मक ॥ ३९ ॥ यथ कर्मा सो दोषना ही ॥ दोष क हाचे बुद्धीचे गयी ॥ तसे
 जे कल्मना करिल का ही ॥ ते फळ पा ही स्वये भोगी ॥ ४० ॥ सोने वंच सोने पणे ॥ त्याचे स्वयघ उ वित्त्वा सुणे ॥ वंचते
 चि निच करणे ॥ ते विस्र कर्म दुषण गुण बुद्धी ॥ ४१ ॥ भूमी सह जे शुद्ध आहे ॥ जे परिजे ते पिक होय ॥ ते विस्र कर्म शुद्ध स

गो

सु

या फल भोगुत्साहे गुणवृत्ति ॥४२॥ वाचा सहज सरळ गोमती ॥ रामनाम जे जोडे ब्रह्म पुच्छी ॥ वृथा जाय करिता
 चावटी ॥ भोगी निंद पाटी महापाप ॥४३॥ ते विस्वधर्म श्रद्धा युक्त ॥ पुरुषास करिविरक्त ॥ ते धर्मी गुणाचा सन्नीपात ॥
 श्रद्धा खंडी ते हे क ॥४४॥ स्वधर्म कर्म श्रद्धा जोडे ॥ क्षणे के लागे विरक्ती कडे ॥ क्षणे भोग भक्तांग वाढे ॥ क्षणे कपडे ममता सं
 धी ॥४५॥ तैसी कामाचिविरक्ती ॥ क्षणे ककामि उरति प्रीति ॥ क्षणे स्त्री भोग असती ॥ क्षणे क मरती परदारि ॥४६॥
 याचि परिधनाचि जोडी ॥ क्षणे कद्रव्या सोडी ॥ क्षणे क अर्थाची अति जोडी ॥ क्षणे क अर्थी परद्रव्य ॥४७॥ श्रीविधधर्म त्रिवि
 धकर्म ॥ त्रिविधरूपे धनागम ॥ या गुणवृत्तिस्तव स्वधर्म ॥ सांडुनि अकर्म करि प्राणि ॥४८॥ एवं धर्म अर्थ कामा आत ॥ गुण स
 न्नीपात अनंत ॥ कोडुनि सांगता येथ ॥ वाढेल गृथ अनिवार ॥४९॥ यात्मागी गुण सन्नीपात ॥ सांगीतला संककीत ॥ तेचि उ
 र्ध्व श्रीकृष्णनाथ ॥ असे सांगत संक्षेपे ॥ १५० ॥ ॥ श्लोक ॥ प्रवृत्ति लक्षण निष्ठा पुमान्यर्हि गृहाश्रमे ॥ स्वधर्मवानु
 तिद्वेत गुणानां समितिर्हि सा ॥ ८ ॥ ॥ टीका ॥ पुरुषांश्चैसी जोगृहश्रम तो जाणवा के वळ काम ते धनित्यनैमिति
 ककर्म ॥ हा स्वधर्म चित्त शुद्धी ॥५१॥ गृहाश्रमी ही पंचसूत ॥ यात्मात मो गुण प्रधान ॥ गृही स्त्री भोग जाण ॥ रजोगुण या हे तु ॥
 ॥५२॥ नित्यनैमित्य स्वधर्म ॥ गृहस्थाचे निजकर्म ॥ हे चित्त शुद्धीचे निजवर्म ॥ सत्व रूगम या हे तु ॥५३॥ गृहाश्रम प्रवृत्ति
 जाण ॥ सदा मिश्रीतति निगुण ॥ गुणिगुणं वत करून ॥ कर्माचरण करविति ॥५४॥ नरे गतातणे गुणें रंगे ॥ स्पृहीक तद्रूप
 भासो लागे ॥ ते विगुणात्मा गुणसंगे ॥ वर्तलागे गुणकर्मि ॥५५॥ जेविका कसव रि उपापण ॥ कसूनि दावि सूवर्णवर्ण ॥
 ते विपुरुषाचिक्रीया जाण ॥ दावि गुणलक्षणविभाग ॥५६॥ ॥ श्लोक ॥ पुरुषं सत्वसंयुक्तमनुमीयाच्छमादिभिः ॥
 रजो कामादिभिरजोयुक्तं क्रोधाद्यैस्तमसायुतं ॥ ९ ॥ ॥ टीका ॥ इंद्रियानिग्रहो यथोचित ॥ जो रामदमिसदाकी
 उत ॥ अंगतिवसे जया उगत ॥ जो जाण निश्चीत सात्वीक ॥५७॥ जो सदा फळ कामे कार्मुक ॥ वाढीस स्वार भोग सु
 रव ॥ द्रव्यार्थी अति राभीक ॥ रजोगुणी लोक ते जाण ॥५८॥ ज्यासी स्वधर्म नाहीरति ॥ आवडे अधर्म प्रीतिनि ॥
 क्रोधलो भोगी वीली स्फुर्ती ॥ तो जाण निश्चीतिता मस्त ॥५९॥ एवं दे स्यानि कर्माचरण ॥ लक्ष्मी जे पुरुष लक्षण
 यानावगा अनुमाने ॥ विवेक सपन्न जाणति ॥६०॥ सामान्यताति निगुण ॥ सांगीतले निरूपण ॥ हे क के स्रणे
 क मन ॥ गुणवृत्तिभिन्न आवधारि ॥६१॥ ॥ श्लोक ॥ यदाभजति मां भक्त्या निरपेक्षः स्वकर्मभिः ॥

॥ तं सर्व प्रकृतिं विद्यात्पुरुष स्थियमेव च ॥१०॥ ॥ टीका ॥ स्वकर्म वांछीत फल ते चिमायचे दृष्टप
उक्त ॥ ते फळाशासादनिके वळ ॥ ते भजनशील मद्रूपि ॥६५॥ करुनि फळंचे सुख ॥ स्वधर्म करिति मासे भजन
पुरुष अथवा स्त्रीयां जाण ॥ ते सहसपन्न निश्चीत ॥६३॥ देहावेवली गदर्शन ॥ तेणे स्त्री पुरुषानामाभीदान ॥ परि
आत्मा आत्मी नाही जाण ॥ जीवत्व समान स्त्री पुरुषी ॥६४॥ चित्तवृत्ति कीया चरण ॥ खानावगा कर्म जाण ॥ ते धनिर
पेशते मासे भजन ॥ स्वधर्म संपूर्ण यानाव ॥६५॥ ऐशिया स्वधर्म वृत्ति ॥ जे धर्म प्रगटे प्राणी भक्ती ॥ ते ते सात्वीक प्रकृ
ति ॥ जाणनि श्चीति उद्वा ॥६६॥ ॥ अत्राका ॥ कर्म करिता फळावा बाढे तो फळ भोग भोगणे पडे स्वकर्म भक्ति
के विघडे ॥ कर्मते कुडे अत्यंत ॥६७॥ कर्म करिता फळ बाधक ॥ न करिता प्रत्यवाय नरक ॥ कर्म कर्म बडू लोक ॥ केले
देख संसारि ॥६८॥ जीव होता जो स्वतंत्र ॥ यवटे कर्माचे चरित्र ॥ तो कर्म केला परतंत्र ॥ अति विचित्र बाधक ॥६९॥ स्व
कर्म भगद्वक्ति ॥ लुणघे घडे के शारिति ॥ तेचि अर्थी चितुपपत्ती ॥ स्वयं श्रीपति सांगत ॥१७०॥ सर्पधावो निधरि तातो डी
तो सर्वांगी घाळी आडी ॥ तेणे धाके जो सोडी ॥ तो विभाडी महादुःख ॥७१॥ ते सर्प बाधे चिसाक डी ॥ निवारि मंत्र वारि गा
रो डी ॥ ते विकर्म कर्म बाधा गाठी ॥ निवारि रोक डी गुरु रावो ॥७२॥ रीघता सदुसी शरण ॥ कर्म करवी ब्रह्मार्पण ॥ तेचि
निरपेक्ष लक्षण ॥ उद्वा जाणनि श्चीत ॥७३॥ अत्र कर्माचे प्रकाराक ॥ कर्मति तुके ब्रह्मात्मक ॥ हेचि मदर्पण चोरव ॥ मा
से भजन देखयारिति ॥७४॥ सर्वे द्वियी ज्ञान सुती ॥ ते ब्रह्मीचि ब्रह्मशक्ति ॥ ऐसे निश्चीय कर्म रीती स्थीति ॥ स्वकर्म भ
क्ती यानाव ॥७५॥ ऐसे निस्वकर्म स्याभाविक ॥ जे मज भजति भाविक ॥ ते ते शुद्ध सात्वीक लोक ॥ जाणनि श्चीत उद्वा ॥७६॥
स्वधर्म सर्वथानिक ॥ लुणतिते मूर्ख के वळ ॥ स्वधर्म निरसी चित्त मळ ॥ कर्म समूळ निर्दळी ॥७७॥ यवठी स्वधर्म चि जो डी ॥ सा
दुनि वांछीति विषय गोडी ॥ ते ते राजसेवापुडी ॥ के वळ वेडी विषयार्थी ॥७८॥ विषय फळ वांछीता देख ॥ देहे धरणे अवश्यक ॥
देहे संभव दुःखदायक ॥ स्वर्ग नरक फळ भोग वि ॥७९॥ यापरि जनि दुःखदाति ॥ राजतामस प्रवृत्ति ॥ एक ल्या रोमि वृत्ति विषदु
ज प्रति सांगेन १८० ॥ ॥ श्लोक ॥ यदा आशिष आशास्य मां भजेत स्वकर्मभिः ॥ तं रज प्रकृतिं विद्यात्सिंहा
शास्यतामसं ॥११॥ ॥ टीका ॥ जो उरें कोचेंगे नि स्वकर्म ॥ वांछी नाना फळ काम ॥ ते ते जाण काम्यकर्म ॥ राजस

श्री

क

धर्मघानाव ८२ जो अभयतरि अति सकाम ॥ तो जे जे अचरे कर्म धर्म ॥ ते ते आवद्ये चि सकाम ॥ तेणें उं पै फ
 कस भ्रमनि जे हेतु ॥ ८३ स्वरूपी सम्यकर्म नाही ॥ कामना काम्य करि पाही ॥ सोने स्वभावे असे ठायी ॥ तेणे उपायी स्व
 यकी जे ॥ ८४ स्वकर्म स्वभावे पवित्र जाण ॥ स्वधर्म मासे शुद्ध भजन ॥ तेथ कामना फळ कामुन ॥ काम्य आपण स्व य
 की जे ॥ ८५ फळ काम्ये जे भजन ॥ ते केवळ फळाचे ची भजन ॥ स्वकामे जे स्वधर्माचरण ॥ ते प्रकृति जाण राजस ॥ ८६
 ऐसहे सिया प्रकृति चा विभाग ॥ स्त्री अथवा होका पुरुष ॥ ते ते जाण पाराजस ॥ एकतामस गुण वृत्ति ॥ ८७ क्रोध यु
 क्त अतः कर्ण ॥ तेणे जीव्याचे स्वधर्माचरण ॥ फळ वांछी सकाम मन ॥ ते प्रकृति जाण तामसी ॥ ८८ जेथे हे पै बाधते ध
 र ॥ ते गयी क्रोध अणि वार ॥ ते भूत मात्री निष्ठुर ॥ ज्याची प्रकृति क्रूर सर्वदा ॥ ८९ ऐ वीया स्वभावावरि ॥ नर होका अ
 थवानारि ॥ ते ते तामस संसारि ॥ निज निर्धारि उद्धवा ॥ ९० जीव स्वरूपे चैतन्य पाहा हो ॥ या सी मी भजक गुण देवो ॥ जी
 वासी का सेवक भावो ॥ सेव्य देवो कैसनि ॥ ९१ यच अर्थ चै निरूपण ॥ कृष्ण साग ता हे भाषण ॥ सेव्य सेवक लक्षण ॥ माया
 गुण संमधे ॥ ९२ ॥

सर्वे जस्त मइ ति गुण जीव स्व नै वेम ॥ चित्त जाये सु भूतानो स ज्ञ मानो नि

वध्यते ॥ १२ ॥ ॥ टीका ॥ बांधो नि नाणिता आया ॥ जे विदे हादि न आसे आया ॥ ते विभंगवता धीन माया ॥ नातको नि या
 वर्त वि ॥ ९३ ॥ माया वर्त वि ता निर्वे वि ता ॥ स्वामी भंगवत तत्वता ॥ या त्मा गी माया अध्यक्षी ता ॥ त्या सी चि सर्व दो वेद बोले
 ॥ ९४ ॥ सूर्य अंधारा ते नाशी ॥ ते वि मायानि यता हृषी के शी ॥ परि मायो दे ना सी कुरु कुरु नके ॥ ९५ ॥ मासे जे न दे स्व गे पण
 ते चि मायेचे मुख्य लक्षण ॥ मज पासी माया जाण ॥ गुणा भी मोने सी नाही ॥ ९६ ॥ माया बी वी त चै तन्य ॥ त्या सी बोली जे जी
 व पण ॥ या जीवा सी त्रि गुणी बांधोन ॥ देह आभी मान रु ठके ता ॥ ९७ ॥ जीवा सी त्मा गता देहा भी मान ॥ तो सात्मा माया धी न
 मायानियता नारायण ॥ तो स्वामी जाण जीवाचा ॥ ९८ ॥ जीव गुणा भी मोने बद्ध ॥ या त्मा गी सात्मा तो से वक ॥ अत्मा गुणा
 तित चोख ॥ बंध मोचक जीवाचा ॥ ९९ ॥ या परि सेव्य सेवक भावो ॥ विभाग दो नि या पा हा हो ॥ श्री गुण गुणाचा अन्वयो ॥ विषद
 देवो स्वय सांगे ॥ १०० ॥ गुण ति निरम समान ॥ सा मा जी क्षो भो नि या जाण ॥ जो जो बोळ अधी क गुण ॥ ते ते लक्षण हरि सांगे ॥ १०० ॥

त

परितो स मु रय रणा पा सी

१०१०
॥६॥

॥३१॥
॥६५॥

ब्रह्म निर्मळत्वे प्रसीद्ध ॥ कर्म साधत्वे अति शुद्ध ॥ यथ कर्म उपजे कर्म बाध ॥ तो चित्त संवध गुण क्षोभे ॥ १ ॥ कर्म क्री दोषना
ही ॥ दोष चित्त वृत्ति चाटायी ॥ तो ही गुण क्षोभ पा ही ॥ घाती अपायी पुरुषाते ॥ २ ॥ याचि अर्थीचे निरूपण ॥ सांगी तले मी भ्रत
क्षण ॥ अता वाढ ल्मा ए के क गुण ॥ गुण लक्षण ते एक ॥ ३ ॥ जो गुण वाढे अति उन्नति ॥ इतर त्या तळी वर्तती ॥ ते काळीचि पुरुष
स्थीति ॥ ४ ॥ इ वा प्रति हरि संगे ॥ ४ ॥ ॥ श्लोक ॥ यदेतरो जयसवं भास्वर चित्रादिभिः ॥ तदा सुखेन युज्येत धर्मता

नादिभिः पुमान् ॥ १३ ॥ ॥ टीका ॥ समूळ फळात्वात्पुण्ये ॥ निर्विकल्प निराभीमानि ॥ जो लागे स्वधर्मचरणी ॥ ते
जतमदोनि जीन सत्वा ॥ ५ ॥ जैभ्यां चैभरण उघडे ॥ ते हरिकथा श्रवण घडे ॥ मुरवी हरिनाम किति आवडे ॥ तेणे सत्व
वाढे अति शुद्ध ॥ ६ ॥ दैवे जो दुत्मास संगति ॥ श्रवणी श्रवण लाचावती ॥ वाचात्वावनाम किति ॥ अति प्रीति अही नीशी

॥ ७ ॥ ऐश्वर्य श्रीया अनुवृत्ति ॥ रजतमदोनि क्षीणे हाति ॥ सत्व वाढे अनुदे गवृत्ति ॥ सासत्वाचि स्थीति समूळ रे क ॥ ८ ॥
भास्वरत्वे प्रकाशावहळ ॥ विषदत्वे अति निर्मळ ॥ त्रिवक्षण जेशांत सरळ ॥ हे सत्वाचे केवळ स्वरूप मुरव्य ॥ ९ ॥ हे सत्वाचि
सत्व वृत्ति ॥ अतुडे ज्या साधका हाति ॥ ते काळीचि पुरुष स्थीति ॥ एक तुज प्रति सांगे न ॥ १० ॥ जे विवेकाचे तारु आतुडे

वैराग्याचे निज गुज जोडे ॥ सेवे द्विधी प्रकाशा उघडे ॥ सीगचे स्वधर्माचि ११ ॥ ते काळीजन अधर्मता गर्व अभी
मान असत्यता ॥ कळाकारे ही सीकविता ॥ न करि सुर्वथा अधर्म ॥ १२ ॥ ऐश्वर्यानि जसत्व दुर्गी ॥ सुख सुखायेति भे
दि ॥ यासी स्वानंदे कोदे सुखी ॥ शुद्ध सत्व पुढीयानाव ॥ १४ ॥ निकट असता दुःख साधन ॥ सावी कसदा सुख संपु
बलाकारे क्षोभ वितामने ॥ सावी कजाण क्षोभेना ॥ १३ ॥ ऐसे विषद सत्व जयापारी ॥ रामदमशो किति तयासी ॥ वैराग्य

लागे पायासी ॥ शुद्ध सत्वाशीत उद्धवा ॥ १५ ॥ तेसे चि सत्व तम जीणे न ॥ जैवाढे गारजो गुण ॥ ते राज साचे लक्षण ॥ एक
सपूर्ण हरि संगे ॥ १६ ॥ ॥ श्लोक ॥ यदा जयतमः सत्वरजः संगं भिदावत् ॥ तदा दुःखेन युज्येत कर्मणा यदा सा

श्रियाः ॥ १४ ॥ ॥ टीका ॥ रजो रद्धीचे कारण ॥ ते ही उपजे हाना भीमान ॥ पदापदिदे रे दोष गुण ॥ वाळी रम्भा
प्रतिष्ठा ॥ १७ ॥ नक्कर जो गुणा चिरव्याति ॥ क्षांत पणे कामाशक्ति ॥ नाना भोग वांछीचि ॥ तेणे रजाचि प्राप्ती अनिवार
॥ १६ ॥

॥ ६ ॥

ऐ से विरजो गुण वाटे वाटी ॥ सत्वात माते तळी पाटी ॥ त्या राजाची स्वरूपता मोठी ॥ एक निरवडी सांगेन ॥ १९ ॥ श्लोक त्रैलोक्ये
वळी प्रबळ ॥ रजसं गभिदा बळ ॥ बोलीतार जो गुण के बळ ॥ तेचिविवळ हरिसांगे ॥ २० ॥ संग स्रण जे देहाभीमान ॥
देहस्रण जे मीमांसेपण ॥ वळस्रण जे कामगहण ॥ अगहो पूर्णवृत्तिचा ॥ २१ ॥ देहाभीमाने दुःख दुष्टि ॥ शैवभयलाग
पाठि ॥ याने स्वदेहाचियापुष्ठी ॥ काम्यकामांशिंठी कर्माचिमांठी ॥ २२ ॥ ज्याकर्मचिचिकै वाडे ॥ यशस्वी उंद उजोडे
तेते कर्मवाट विपुळे ॥ देरजो गुणे घडे अचरण ॥ २३ ॥ मी एकपवित्रभी जगति ॥ माहीच उत्तमकर्म स्थीति ॥ प्रवृत्ति
मान्यता अशक्ति ॥ तेजाणावि स्थीति राजस ॥ २४ ॥ राजाचे बळ उद्वुट ॥ कर्म अचरि उगाचाट ॥ वाटविकर्मकचाट ॥ तो
जाण श्रद्धराजस ॥ २५ ॥ बाहुरदीस सातीक स्थीति ॥ अंतरिकर्म वासना द्रव्यासक्ती ॥ ज्यासी प्रीया आवेडे चिति ॥ तो
जाणनिश्चीति राजस ॥ २६ ॥ तेका सत्तरज दोनिगुण ॥ जिणो नितमवाटे पूर्ण ॥ तेका कीचे पुरुष लक्षण ॥ स्वयं नाशय
ण सांगत ॥ २७ ॥ ॥ श्लोक ॥ यदा जय इजः सर्वं तमो गूढं लयं जडं ॥ शुभ्येत शोक मोहाभ्यां निद्रया हिंसाया
॥ १५ ॥ ॥ टीका ॥ रजसत्त्वकरनिगुण ॥ जैतमोगुण होय रूढ ॥ तैतोपुरुषासी सदृढ ॥ करी जडमूढ उवति लब्ध ॥ २८ ॥
विरवा सूनि वाडे काडे ॥ जैपरद्रव्य बुडवणे पडे ॥ कापरदारागमन घडे ॥ तेतेणे वाटे तमोगुण ॥ २९ ॥ स्वमुखपरापवादा बोलणे
स्वयसाधूनिदाकरण ॥ संतसज्जनादेषने ॥ ते तमाचे गाने अनिगार ॥ ३० ॥ धुईचे निअळेपणे ॥ पडे सूर्यासी साकणे ॥
ते विविवेकाचे जीने ॥ तमोगुणे मासी जे ॥ ३१ ॥ सत्त्वगुणे प्रकाशक ॥ रजप्रवृत्ति प्रवृत्तक ॥ दोनिते गीकोनिदस्व ॥ तमा
चे अधीन्य अधर्म वाहे ॥ ३२ ॥ करिना पूज्याचे हेळण ॥ साधूंचे देखता दोषगुण ॥ तेणे स्ववळत्ता तमोगुण ॥ साचे स्वरूप
पूर्णते एक ॥ ३३ ॥ तमोगुण वाटत्सा प्रौढ ॥ स्फुर्ति मात्र होय मूढ ॥ लयो उपजवो निदृढ ॥ करी जड जीवाते ॥ ३४ ॥
कार्यकार्यविवेकज्ञान ॥ ते स्फुर्ति अंध होय पूर्ण ॥ यानावगा मूढपण ॥ एकचि नूळ साचे ॥ ३५ ॥ जागृति माझी असता
चिना ॥ अर्थ स्वार्थ परमार्थ ॥ काही स्मरेणाकृयाकृत्य ॥ लयो निश्चीत यानावे ॥ ३६ ॥ समरता ही इद्रियवृत्ति ॥ अनुद्य
मे रतब्धगति ॥ नीः शषलोपे ज्ञान हौ शक्ती ॥ जडत्व प्राप्ती घावाव ॥ ३७ ॥ मूढत्व पावे सख दुःख ॥ जडत्वे मिथ्या मोह

देख ॥ मोहास्तव होय घातक ॥ अति विवेक अधर्मी ॥ ३८ ॥ एक लयाचे को तुक ॥ अहो रात्र निद्रा अधिक ॥ निद्रे वे
गळे बुद्ध सुख ॥ नावडे देखता मसा ॥ ३९ ॥ पूर्ण वाढला तमोगुण ॥ ऐसे होय पुरुष लक्षण ॥ वाढला सहादि गुण
ककोणते हरिसांगे ॥ ४० ॥ ॥ श्लोक ॥ यदा चित्तं प्रसीदत ईद्रियाणां च निवृत्तिः ॥ देहभंगं मनोसंगं त
सर्वं विद्धि मत्संद ॥ ४१ ॥ ॥ टीका ॥ वाढली या सत्तु गुण ॥ चित्तसदा सुप्रसन्न ॥ कामक्रोधलोभाचे स्फुरण
सर्वथा जाणस्फुरेण ॥ ४२ ॥ चीतवणवणी विषयात्मागी ॥ ते उदास होय विषयभोगी ॥ विषय अटकता हि उवांगी ॥ ते
विषयसंगी विगुतेना ॥ ४३ ॥ जेविजळामाजी जळस्य ॥ पत्रीनिपत्र जळी अलीस्य ॥ तेवि विषयामाजी चित्त ॥ विषया
तीतमक्षो धे ॥ ४४ ॥ सदा मरण भये देहासी ॥ ते मरण आलीयो देहापासी ॥ अयनुपजे साळी कासी ॥ भावे मत्पदासी नि
वठले ॥ ४५ ॥ साही कमसदि अनन्य शरण ॥ यात्मागी बाधीना जन्म मरण ॥ यास्थिति वर्तविसत्वगुण ॥ अता एकल
क्षणरजाचे ॥ ४६ ॥ जववरि उसेमितुपण ॥ तववरि आवश्य बाधी मरण ॥ साही कमसदि अभीर्न ॥ यात्मागी म
रण भयना ही ॥ ४७ ॥ ॥ श्लोक ॥ विकुर्वन्नक्रियया चाधीरनिवृत्तिचेतसां ॥ गोत्रासाश्च मनोशांतरजएतैनि
नामय ॥ ४८ ॥ ॥ टीका ॥ सबळली यारजोगुण ॥ विषय चित्तातिदारुण ॥ कर्मेद्रीयी श्रीयाभरण ॥ नानापरि
चे जाणउपपादि ॥ ४९ ॥ शरिर असता ही स्वस्थ ॥ मन चित्तानुरअति श्रान्त ॥ वाढविषय स्वार्थ ॥ दुःखी होत सर्वदा ॥ ४९ ॥
असतापुत्रविन संसृति ॥ अधीक स्वार्थ वाढविचिन्ति ॥ राजसाचि चित्तवृत्ति ॥ नमनि नीवृत्ति क्षणार्ध ॥ ४९ ॥ नसताविका
राचे कारण ॥ चित्तविकार चिन्ति अपण ॥ हचिराज साचे लक्षण ॥ मुख्य तजाण उद्धवा ॥ ५० ॥ रात्री नो हें पै प्रवळ
नादिवसनके स्वजळ ॥ जैसी सांजवेळी सांजवेळ ॥ ते साके वळरजोगुण ॥ ५१ ॥ सतरजाचि उणरगुण ॥ तुजदाविली
बोळखण ॥ अता एकतमोगुण ॥ जडलक्षण तयाचे ॥ ५२ ॥ ॥ श्लोक ॥ सीद चित्तं प्रत्येतचेतसो ग्रहणक्षमं
॥ मनो नखं तमो ग्लानि रत्नमस्तदुपधारय ॥ ५३ ॥ ॥ टीका ॥ चित्ति चित्ता अग्रहण ॥ ते माहामो ही नि मग्न ॥ कोणे
ही अर्थचे ज्ञान ॥ हृदयी जाणस्फुरेना ॥ ५३ ॥ सुषुप्तीवेगळे अज्ञान ॥ सदापळे देखानि ज्ञान ॥ जैविका अभाळीति अवर्ण

तेथे नवलकै सेहाले ॥ जाण ॥ त्या ज्ञानोते अज्ञान गीळु न गके ॥ ५४ ॥ जागाचि परिनिजे त्यादिसे ॥ कर्म करि स्फुरण
 नसे ॥ जेविका आभाळीतले आवसे ॥ रात्री चाले चाले जैसे आंधळे ॥ ५५ ॥ सकळ शरिराचा गोळा ॥ होय आठ
 साचा मोदळा ॥ हात मोठ्यानिचा सोहळा ॥ पडक यडोळा चि नरुति ॥ ५६ ॥ संकल्प वि कल्पाचि ख्याति ॥ उजवि सदा
 मनो रुति ॥ त्या मनाचि जड होय स्थीति ॥ संकल्प स्फुर्ति स्फुरेण ॥ ५७ ॥ अणिक ही नवल स्थीति ॥ चिन्ता सीनाटे वेचि
 न स्फुर्ति ॥ थवठी राठी तमाचि ख्याति ॥ मनो रुति नो राके ॥ ५८ ॥ यापरित माचे बळ होय ॥ ते मनोते अज्ञान स्वाय ॥
 ते काळी मन नष्ट गाय ॥ मृच्छी लव राहू मोठे ॥ ५९ ॥ मननी शेष जैनासते ॥ ते महादुःख कोण भोगीते ॥ शास्त्रा गी
 त माचे निरेक्य मते ॥ मन उरेते थज उ मूढ ॥ ६० ॥ यापरिवर्तति जे गति ॥ तेचि अत्यंत दुःखदा ति ॥ या नागात मा
 चि स्थीति ॥ जाणनि स्थीति उडवा ॥ ६१ ॥ वाढविता गुणरुति ॥ कोणे गुणे कोण वाढति ॥ येचि अर्थीचि उपपती ॥ स्व
 यश्रीपती सागत ॥ ६२ ॥ ॥ श्लोक ॥ एधमाने गुणे सव देवा नां वल मेधने ॥ असुराणां च रजसितमस्यु दुव
 रक्षसां ॥ १९ ॥ ॥ टीका ॥ दैवि असुरि राक्षसी स्थीति ॥ हे श्रीगुण गुणाचि सपति ॥ जे जे ब्रह्माडी इंद्रीय रुति
 तेचि स्थीति पिडी ही ॥ ६३ ॥ ब्रह्माडि सकळ देवो ॥ महापुरुषाचे अवयवो ॥ पीडी हीतेची स्वयं मेवो ॥ वर्तती सर्व नि
 जे ऐक्य ॥ ६४ ॥ कामाभीत्याषट्ठ चिति ॥ अणि स्वधर्मतिरिवर्तती ॥ ऐसी जे इंद्रीय स्थीति ॥ ते असुरि संपति गज
 र्सी ॥ ६५ ॥ उचित धर्म गाद्य स्थीति ॥ निरुति कर्मिजे प्ररुति ॥ ऐसी जे इंद्रीय रुति ॥ ते दैवि सपति सत्व स्थ ॥ ६६ ॥ रा
 त्कोभमाहे क्रोध चिति ॥ सदा अधर्मि प्ररुति ॥ ऐसी जे इंद्रीय स्थीति ॥ ते राक्षसी संपति तमासी ॥ ६७ ॥ क्षणे सका
 मक्षणे नीः काम ॥ ऐसा जे थवोठ स्वधर्म ॥ ते थे देवा असुरापरम ॥ होय सग्याम रुति सी ॥ ६८ ॥ चिनि वाळुनि माहात्र
 म ॥ अधर्म चिमानि स्वधर्म ॥ ते राक्षसाचा पराक्रम ॥ देवासुरापरम निर्मळी ॥ ६९ ॥ सकाम निःकाम माहे भ्रमे सी ॥ रुति
 वर्त गाज या पासी ॥ ते थुदेवा असुरा राक्षसासी ॥ कळ हो अनिवार अहिर्निशी ॥ अनिवार ॥ ७० ॥ क्षणे करिति परमार्थी ॥
 क्षणे करिति अर्थ स्वार्थी ॥ कक्षणे कहाय अनर्थी ॥ परदारारति परद्रव्ये ॥ ७१ ॥ ऐशीय गाचि नरुति ॥ कदानुपजे निज
 र्गाति ॥ मापरमार्थाचि प्राप्ती ॥ कैशारि ति हो इत्क ॥ ७२ ॥ साधक सर्व रापुसति ॥ कोण बाधा असे चि नरुति ॥ ते बाध

कला चि रथीति ॥ विषदतु ज प्रति सां गीतली ॥७३॥ एकचि जै पुरता जोडे ॥ ते एकविध वृत्ति वाटे ॥ हेतव सर्वथान
 घडे ॥ गुण गुणासी भिडे ॥ उपमदे ॥७४॥ एकचि न जोडे गुणा वस्था ॥ यात्मा गी न हे एक विध्यता ॥ तेणे अनि वार भव
 व्यथा ॥ बाधीभूता गुण क्षोभे ॥७५॥ तम अधमो केडे वाटे ॥ रजो गुण देह कर्मा केडे ॥ सत्व गुणा सी वाढी न घडे ॥ मूळ
 ता जोडे कै सेनि ॥७६॥ रजतम उभय संधी ॥ सत्व आडकले दो ही मधी ॥ ते वाढे न रा के श्री शुद्धी ॥ ते राश्य रक्षी सत्व
 गुणे ॥७७॥ श्री गुण गुणा चि श्री पुती ॥ अपण क ली अपत्मा पोटी ॥ ते चि भव भय होउ नियाउ दि ॥ गणे पाटी बाधकते ॥
 ७८॥ सत्वे दे वासी प्रबळ बळ ॥ रजो गुणे दै य प्रबळ ॥ तमो गुणे के बळ ॥ अतुळ बळ राक्षसा ॥७९॥ हे गुण वृत्ति चि भव स्या ॥ स
 मूळ सां गीतली कथा ॥ उभाता त्रि गुणा च्या तिन आवस्था ॥ एक उभाता सां गे न ॥८०॥ ॥ श्लोक ॥ सत्वा जागरण विद्य
 द्रव्य सा स्व प्रमादि शोत ॥ प्र स्यापंत मसा जंतो स्तु री पं विपु संततं ॥ २० ॥ ॥ टीका ॥ सत्व गुणा चि रथीति ॥
 नातके स्वल्प उष्ण स्फुषु सी ॥ जीविसदा नो रजे ज्या गृति ॥ इ रीय प्रवृत्ति सावध ॥८१॥ रजो गुणाचे नि अधीक्ये चित्त वृत्ति ते
 स्वल्प जीके ॥ जागृति स्फुषु सी हिदु रिगके ॥ वै सत्को रवे स्वल्प चि ॥८२॥ तमो गुण वाढे त्सा वाढी ॥ जागृति स्वल्पदु रिद व
 डी ॥ मग स्फुषु सी अति गां ठी ॥ उगा दे के रो कडी जीवा उां गी ॥८३॥ सासी सभे वै सत्मा पोहे ॥ बो लत बो लता डु ल की जाये
 जे वित जे वित ही पोहे ॥ सोपि साय कड कडा ॥८४॥ क्षणा जागृति क्षणा स्फुषु त्यी ॥ क्षणे क स्वप्ना चि प्रतिति ॥ हे श्री गुणा चि
 मी श्रीत र्ति ॥ जे जागृति ते जाग वीत ॥८५॥ जागृति स्वल्प स्फुषु सी ॥ जी ही उा व स्याते प्रा का शीति ॥ यात्मा गी ते चो थी ॥ तु रि
 पक्ष ण ति सहा ना ॥८६॥ जे जागृति ते जाग वीत ॥ जे स्वप्नी स्वप्याते जाग वीत ॥ जे स्फुषु सी ते निज वीत ॥ घाते तु रि य प्र ण
 तनु द्वा ॥८७॥ जे ति ही उा व स्या आता ॥ आ सो नि न के उा व स्या भूत ॥ जे निर्गुण निज नित्य ॥ घाते म्हणत तु री य ॥८८॥
 जे विपुत्राचे निजाते पणे ॥ पुरुष पि ताना व पावणे ॥ ते वि ति ही उा व स्या गुणे ॥ तु रि क्षण ने व रक्त सी ॥८९॥ वरक्त वरि अ
 व स्या भासे ॥ भासती उा व स्या सवे चि नाशे ॥ घा ना सा मा जी व रक्त न नासे ॥ उरे उरि ना शे तु रि ये ॥९०॥ तु री य त्री का
 ळी सतत ॥ या परि जाणा वे यथ ॥ उा ता गुण वृत्ति भु मि का प्रा त्य ॥ तो ही वृत्ता त ह रि सां गे ॥९१॥ ॥ श्लोक ॥ उपरुप
 रि गच्छं ति सत्वे न वा क्षणा जनाः ॥ तमसा ऽ धो ऽ ध उा मु र व्या द्र ज सां ऽ तर चो रि णः ॥ २१ ॥ ॥ टीका ॥

सव गुणाचे उचयतन ॥ मुख्यते ब्राह्मण जाण ॥ ते न करुनि ब्रह्मार्पण ॥ स्वधर्माचरण जे करिति ॥ १२ ॥ यासी स्वधर्मा
 च्याक मंत्राकी ॥ उर्ध्वलोक होय गति ॥ लोकलोकंतर प्राप्ती ॥ ब्राह्मण पावति ते ऐक ॥ १३ ॥ स्वर्गलोक महलोक ॥ ऋमुनि पा
 वति जनलोक ॥ उर्ध्वलोक नियात पोलोक ॥ पावति सावीक सखलोक ॥ १४ ॥ वाठली चारलोगुण ॥ श्रुद्रादिचा उळपण ॥ पु
 ठ तिज न्मपुठ ति मरण ॥ आविश्म जाण भोगवि ॥ १५ ॥ वाठली यातमोगुण ॥ पशुवाहियोनि पावोन ॥ हंशामराक वृक्ष
 पाषाण ॥ यानिस पूर्ण भोगवि ॥ १६ ॥ प्राण्यासी अतः काळी जाण ॥ देहाति जे बोढे गुण ॥ यामरणाचे फळकोण ॥ ते ही
 श्रीकृष्ण स्वयसागे ॥ १७ ॥ अनन्य करिता मासी भक्ति ॥ भक्तासी अती कोण गति ॥ ते ही विरचिच उपपत्ती ॥ श्लोकाति ह
 रिसागे ॥ १८ ॥ ॥ श्लोक ॥ सवे प्रतीताः स्वर्गति नरलोकरजो लयाः ॥ तमोत्वयास्तु निरमावेवा न गुणाः ॥ २२ ॥
 ॥ टीका ॥ संसारि मुख्यते श्रीगुण ॥ तेथे वाढोनिया सव गुण ॥ ज्यासी ब्राह्मण होय मरण ॥ तो स्वर्गभोगी जाण ही विदेह पा
 वे ॥ १९ ॥ सव निमात्मा सावीक ॥ ते पावति स्वर्गलोक ॥ रजोगुण निमात्मा देख ॥ यामनुस्य लोकमानवो ॥ २० ॥ अंतिवा
 ढोनियात माधीव्य ॥ तमोगुण निमात्मा देख ॥ ते भोगीति महानरक ॥ दुःखदायक दारुण ॥ १ ॥ सप्रेम करिता मासी भक्ति ॥
 मासी या भक्तासी देहाति ॥ देही प्रगेट मासी मृति ॥ घबघवि ती निजतेजे ॥ २ ॥ राखचक्र गदादिस पूर्ण ॥ पीतांबर धारि
 श्रीकृष्ण ॥ ध्यान धरुनि पावे मरण ॥ तो वैकुंठि जाण मिहाय ॥ ३ ॥ सर्वभूति मी उगला पूर्ण ॥ ऐसे जाचे अखड भजन ॥ ते
 जीताचि ती गुण ॥ जीणानि नीगुण पावति ॥ ४ ॥ याच्या देहासी देव अत्मा मरण ॥ मजवे गळे नाही स्थान ॥ ते निजा
 नदे परिपूर्ण ॥ निजनिगुण स्वयहाति ॥ ५ ॥ मासे स्वरूप निजनिगुण ॥ अथवा वैकुंठिचे सगुण ॥ दोही येकचि निःश्व
 य जाण ॥ सगुणनिगुण साम साम्य ॥ ६ ॥ स्वर्गनिक मणुस्य लोक ॥ प्राप्ती पावते निगुणचोख ॥ याचे साधनाचे कौतुक
 स्वययदुनायक सागत ॥ ७ ॥ ॥ श्लोक ॥ मदपेण निष्पलं वासातिकं निजकर्मनत् ॥ राजसफल सकलं हि
 सा प्राप्तादितामस ॥ २३ ॥ ॥ टीका ॥ सकळकी याकर्मचरण ॥ सकल विण उपापण ॥ सहजे होय ब्रह्मार्पण ॥ हे
 निगुण साधन शोधित सत्वे ॥ वर्णाश्रमधर्म सकळ ॥ उचरेपकी नवा छी फळ ॥ मासे भक्तिचे प्रेम प्रबळ ॥ हे कर्मके

वळसाही क॥९॥ मासे भजन हाचि स्वधर्म॥ याचि नाव गानि जकर्म॥ ऐस ज्या सी कळे वर्म॥ साही क कर्म या नाव
 १०॥ स्वधर्म अचरोनि सकळ॥ ईद्रा दिवेनाय जननीळ॥ जो वाही ई हा मुत्र फळ॥ हे कर्म के वळ राज स॥११॥ जे कर्मी
 प्रगट हीं सा घडे॥ काअभी चारिक करणे घडे॥ स्वरूपे जे कर्म कुडे॥ ते जाण धडकुडे तामस॥१२॥ जे धर्मी कक
 मी च्यार॥ जेथ साधू सी अति तरु॥ जेथे निदेचा प्रवळ भरु॥ तो कर्मोदरु तामस॥१३॥ उगाता त्रीगुण उषणी नि
 गुण॥ पाचे चतुर्विध लक्षण॥ स्वयं श्लोकी श्री कृष्ण॥ स्वमुखे उगापण सागत॥१४॥ श्लोक॥ कै वल्य सार्द्धि के लाने र
 जो वै कल्पिके चयत् ॥ प्राकृतं तामसं ज्ञानमन्निष्टं निर्गणं स्मृतं ॥ २४ ॥ ॥ टीका ॥ देही असो निदेहाति त॥
 भूतिभूतात्मा भगवत ॥ भूतासबाह्य सभा भरित ॥ हे ज्ञान निश्चीत साही क॥१५॥ १मी न्न खानि १मी न्न कार॥ १मी
 न्नानावे भी न्न व्यापार॥ तेथ वक्तू दे से उ १मी न्न कार॥ हे ज्ञान साचार साही क॥१६॥ करुनि वेद शास्त्र पठना॥ निर्धा
 रितानि ज्ञान॥ सवेचिक ली आपण॥ विकल्प पूर्ण रजाचे॥१७॥ करुनि वार्तिका त विसती॥ अद्वैत निश्चयो ना
 ही चिति॥ आपण विकल्पी आपु ल्यायु ती॥ ते ज्ञान निश्चीति राज स॥१८॥ करु निवेद शास्त्र श्रवण॥ होय शि श्लो
 य पारायण॥ ईद्री यार्थी श्रद्धा पूर्ण॥ तो के वळ जाण राज स॥१९॥ ऐक निश्चयो ना ही चिति॥ विकल्प उपज तिने णे की ति
 हेर जो गुणाचि ज्ञान रु नि॥ ऐक निश्ची ति त मो ज्ञान॥ २०॥ माहा माहे गी जी ज्ञाने रै नि ॥ श्री ज उ आ ध मा नी नि श्ची ति
 नै वर पदार्थी असती॥ ते ज्ञान निश्ची ति तामसा॥ २१॥ उगाहार निद्रा भय मैथुन॥ के वळ प सु प्राय जे ज्ञान॥ ते निश्च
 य तामस जाण॥ ऐक निर्गुण विभाग॥ २२॥ कार्य करता उगाणिकारण॥ त्रिपुटि त्रिगुणे सी करुनि शून्य॥ के वळ जे चे
 त न्य घ न॥ ते निर्गुण ज्ञान उडवा॥ २३॥ सहाचे निज उल्हासे॥ सर्वे द्वीयी ज्ञान प्रकारे॥ ते ज्ञान चि मा नी वाय से॥ श्री
 ज्ञान रूपे असे अनादि॥ २४॥ सीधु जळ सरित वाहाति॥ ते आली या सीधु प्रती॥ तेणे उल्हासे मा आ पा य ति॥ ते
 वि ज्ञान स्फुटि श्ला घे ना॥ २५॥ ए जे गुण आली या सकाम॥ या सी श्लो भ उ न वा के काम॥ एणे मासे चि चाले काम्य क
 र्म॥ शेखी मी निः क्काम निजा ने॥ २६॥ श्लोका का म्य कामा चा साहळा॥ जे वि सूर्या नि वाधी उन्हाळा॥ ते वि ज्ञान्य कर्मी मी

सु

जि का का ॥ मासे नि स्व ज्ये का काम सवे ग ॥ २७ ॥ त मो गुणा च्या ह्य डा डा ॥ प डी ला मा हा मो हा वा वे
 ठा ॥ न करि ता मा हा वा नि हा डा ॥ मो ह नि र्णय गा हा उ मा पु ण पे जा णे ॥ २८ ॥ सूर्यो न रि से जी क डे ॥ आ धा
 रु च्या पि ति क डे ॥ ते वि स्वरूप नि ह्ये पु ठे ॥ न वा धी सा क डे मो हा चे ॥ २९ ॥ उ मा गी उ मा ह उ ता ति ही गु ण ॥ जो
 ग ज व जी ना आ प ण ॥ ते नि ह्य नि ज नि र्गु ण ॥ उ द्वा जा ण नि श्ची त ॥ ३० ॥ अ हा ना च्या आ व स रि ॥ हा
 ना ची चा उ न ध रि ॥ प्र व र्ते ता का मा च्य रि ॥ नि ह्यो मा चा न करि पा ग डा ॥ ३१ ॥ आ द र्ब ता मो हा चि स ट ॥
 आ चा बो ल क दान पा ल टे ॥ श्री गु णी नि र्गु ण व रा हो टे ॥ मा ही या नि ह्ये म ड्क ॥ ३२ ॥ श्री गु णा चा भी वि ध
 वा स ॥ नि र्गु ण नि ज र ही वा स ॥ ये चि अ धी ह धी के रा ॥ वि ष द वि ला स सा ग ता ॥ ३३ ॥ ॥ श्लोक ॥ व नं तु स
 विक्रे वा सो ग्रा मो रा ज स उ च्य ते ॥ ताम सं घू त स द नं म नि के तां तु नि र्गु णं ॥ ३४ ॥ ॥ गी का ॥ व
 स्ती व्यो पा रि वे क्क रि ॥ का स दा स न्माने रा ज द्वा रि ॥ वि वा हा म ड पा मा हा रि ॥ ज्या सी प्री ति भा रि व स्ती सी ॥ ३५ ॥
 ज्या सी उ मा व डे ज न स प दा ॥ नि क र वा से व स्ती प्र म दा ॥ जो न ग रि ग्रा मि व स स दा ॥ हे व स्ती स पं दा रा ज स ३६ ॥
 जे थ स न्मान वां छी चि त्त ॥ स दा क्षो भ वि ष या स क्त ॥ ए स रे श्री जे थ ॥ ते जा ण नि श्ची त रा ज स ३७ ॥ जे थ सा धु
 नि दा जो डे ॥ जे थ गु ण बो धी टु छि वा टे ॥ ऐ शी या टायी व स्ती उ न टे ॥ ते ता म सा चे गा टे नि वा स स्थान ॥ ३८ ॥ जे
 थ क ल हा चे कार ण ॥ जे थ आ वि वे की हा य म न ॥ वे श्या दू त म थ स द न ॥ हे नि वा स स्थान ता म स ॥ ३९ ॥ दे वा ल यी
 ध व ध कि ति ॥ दे र्वा नि मा ही म ति ॥ सा चा र क्खो वे चि त्त र ति ॥ ते नि र्गु ण व स्ती उ द्वा ॥ ४० ॥ अ भे द भ क्त्या चे नि
 ज म रि र ॥ ते म ज नि र्गु णा चे नि ज घ र ॥ ते थ ज्या चि नि ज र ति स्थी र ॥ ते व स्ती सा चा र नि र्गु ण ॥ ४१ ॥ नि र्गु णा सी
 ध र ग वो ॥ हे बो ल णे सी ग वो ॥ जे थ उ प ज क्ख स द्धा वो ॥ ते व स्ती पा हा हो नि र्गु ण ॥ ४२ ॥ वि ष या ति त नि ज स्थी ति
 क्खे क्ख रू प रा हे र ति ॥ ते नि र्गु णा चि नि ज व स्ती ॥ जा ण नि श्ची ति उ द्वा ॥ ४३ ॥ सा डू नि उ मा का रा च हान ॥

४

निराकारिस्त्वसपन्नं ॥ इति स्त्री रावे परिपूर्ण ॥ तेषु स्त्रीनिगुणो जनि विजनि ॥ ४४ ॥ श्रीगुण संगे त्रिविधकता
 निगुण लक्ष्मीजे चोधा ॥ चतुर्विधक हाचि व्यवस्था ॥ एक उमाती सागेन ॥ ४५ ॥ ॥ श्लोक ॥ सावित्रीको संगी
 रागा घोरा जसः स्मृतः ॥ तामसः स्मृतिविभ्रंशो निर्गुणो मदपाश्रयः ॥ ४६ ॥ ॥ टीका ॥ कोटिनि
 कारो जेता ॥ जे विविधारे निज यथा ॥ ते विरगो रागाव छदिता ॥ साहीकता उमासगी ॥ ४६ ॥ सद्रूपचरणससगी ॥
 सकळ छेद छेदिविरागे ॥ साहीककर्ता निजंगी ॥ विषयसंग आसगी ॥ ४७ ॥ फळ उमाभीनो-व्याचिनि गामी ॥ तेणे उ
 धक्षालीविवेक दृष्टी ॥ राजसकर्ता फळाशोसाही ॥ अतिदुःखकोटि स्वये सो सी ॥ ४८ ॥ नि-रापहारये विवेकज्ञान ॥ स्म
 तिसे राव घराण ॥ नाटवे कार्य कारण ॥ एसाकर्ता जाणतामस ॥ ४९ ॥ अनन्यभावे रुरि सी शरण ॥ कर्मचाळक श्री
 नारायण ॥ कदान धरि कर्माभिमान ॥ हाकर्ता निगुण निश्चय ॥ ५० ॥ श्रीगुणाचि श्रद्धा निविध ॥ निगुणाचि श्र
 द्धा सुद्ध ॥ येच उर्ध्वे च विषुद ॥ म्यगो विदसागत ॥ ५१ ॥ ॥ श्लोक ॥ सावित्र्या ध्यात्सि कौश्ल्य श्रद्धा कर्म
 श्रद्धा तु राजराजसी ॥ तामस्य धर्मया श्रद्धा मसवाया तु निर्गुणा ॥ ५२ ॥ ॥ टीका ॥ देह रक्षेयचे तना
 प्राण ॥ यणे सी सारे जे मिषण ॥ तेथ विवेक करुनि वा पूर्ण ॥ आप्तये मीपण अपणपो ॥ ५२ ॥ देहनके जडम
 दते ॥ इदीयनके मीर कदेहि हो ॥ मोमी यथा अते अना दि सी दे ॥ ५३ ॥ प्राणनके मी-नपठवे ॥ मन-च-चले ले ॥
 कसामीनके ॥ ५४ ॥ चित्तनके मीचित्तकये ॥ बुद्धीनके मी-विकले ॥ अहनके मी-विकले ॥ मोमी यथा अ
 तु अनादि सोड ॥ ५५ ॥ एवमीपणोचो निजसा ॥ निजसा जाणे बुद्धीचतरा ॥ ते आध्यास श्रद्धा उदार ॥ साहीकनर
 ससनाहति ॥ ५६ ॥ जे निजमकामयत साय ॥ ते मोरे विन्मा मीचि आदे ॥ मासामीपणा येन दित्वा प्राये ॥ मीचि मि
 मये कोटोनि ॥ ५७ ॥ देवा ध्यात्सि कौश्ल्य श्रद्धा ॥ साहीकं पासावे सो सरा ॥ आकारा जसा विषय ॥ एकप्रभु
 हासागेना ॥ ५८ ॥ मीरकयेथे वर्णाश्रमा ॥ मीयकयेथे आश्रमधर्मा ॥ मीपेकयेथे कर्ताकमी ॥ देमनाधर्मा दृढमा-गी ॥ ५९ ॥

कः

मी

ये षो भावार्थे कर्म तत्परः ॥ कुरु मृ सुके चा आदरः ॥ अति शय वाठ वि शो च्या चारु ॥ विधिनिषेधी थोर आवर्त भवे
॥५९॥ दोष वृद्धी चारु गणी ॥ मिर वि ती गुण दा वाचि श्रे णी ॥ य विव प णा च्या आभी मानि ॥ अ इय सी न म नि शुचि त्वे ॥६०॥
दे हा भी मान धे तु नि स्वाहा ॥ सत्य माने कर्म वा धा ॥ ते दे रा न सा चि कर्म म दा ॥ आ ण प्र वृ द्धा उ द्दमा ॥६१॥ अ धि क आ
वि वे क वा दे ॥ जे णे आ गी कर्म च रे ॥ अ धर्म वि जो डी जो डे ॥ हे श्र द्धा आ वे दे ता म सी ॥६२॥ जे णे अ पे चा चे पा न स्वे
खा अ भ श्य भ क्षण ॥ अ ग म्या रि घे दु ग मन ॥ हे श्र द्धा स पू र्ण ता म सी ॥६३॥ अ धर्म तो चि मानि धर्म हे ता म सी श्र
द्धे चे क र्म ॥ अ ता नि गु ण श्र द्धा सै पू र्ण प र म ॥ उ त्त मो तं म ते ऐ क ॥६४॥ स र्व भु ति भ ग व त ॥ ऐ सी ये श्र द्ध श्र द्धा व त ॥
अ न त्प भा वे भू ता भ ज न ॥ जे भा का र्थे भ ज न नि गु ण ॥६५॥ र वी पु त्र वि त जी वि त ॥ म ज त्मा गी कुर व डी क रित ॥ अ न न्य
भा वे म ज जे भं ज त ॥ ते श्र द्धा नि श्री म नि गु ण ॥६६॥ आ सि पु र्वा र्थ ध्या ये ति ॥ उ पे क्ष नि चा री मु की ॥ ऐ क्य भा वे म ज भ ज
ति ॥ ते श्र द्धा स प ति नि गु ण ॥६७॥ नि क्त म वा म स्म र ण ॥ नि त्मि भ ह रि कि र्म न ॥ भा वा र्थे जे जे भ ज न ॥ ते श्र द्धा नि गु ण उ
ध वा ॥६८॥ श्री गु ण वा वि वि ध उ हार ॥ स य सा गे शं र ग ध र ॥ नि गु ण आ हा रा चा ण्द्र का र ॥ स र्वो क वि चा र ह रि सा गे
॥६९॥ ॥ श्लोक ॥ प थ्ये पू त म ना य स मा हा र्थ सा त्कि कं स्मृतं ॥ रा ज सं चे रि य प्रे षं ता म सं च र्ति दा शु चि ॥
॥७०॥ ॥ टी का ॥ प वि त्र आ णि ह व सार ॥ स त्व वृ द्धी सो ही त कर ॥ अ प्रा या सी प्रा त्यी सा चार ॥ सा ती क आ हा र वा
ना व ॥७१॥ अ त्मा हा र ना वे भ व वृ थ्य ॥ प वि त्र श्रे णी जे ध र्म जी त ॥ ते ही अ प्र या सो न प्रा त्य ॥ तो जा ण नि श्ची त सा ती आ
हा र ॥७२॥ गो उ ख र पु स अ व ट ॥ ति वि व द्यो की व ति स्व ट ॥ चि रि व चो की व तु र ट ॥ व कि व व व व ट अ की ते ॥ ७३॥ र सी र सा
तं र मि व नि ॥ प ही का त व नि सी स्व रि णी ॥ कु ड्क ड नि पु स स मा नि ॥ अ हा र भ र णी रा ज स ॥७४॥ ना ना परि चा आ व यी ॥
स डी वा सो षे ति वा प र व डी ॥ र स ना क र वा चि अ ति गो डी ॥ तो अ हा र नि र व डी रा ज सा ॥७५॥ ना ना परि चे आ या स ॥ क र्म नि
अ ति आ या स ॥ आ हा र से वि ति रा ज स ॥ ऐ क ता म स भो ज न ॥७६॥ से वि ता द र्ग ची उ न्मा र क ॥ परि पा के क रि मू र्खे ॥ अ म्बु
धि आ णी दुः ख दाय क ॥ हा अ ह र दे स ता म सा ॥७७॥ अ तं व ता चा भ क्त प्र सा द ॥ सा धु स ज्ज ना चे दो य सु द ॥ हा नि र्नु न आ हा

र प्रसीद ॥ टकोरे गोविंद बोलीला ॥ ७७ ॥ ग्यासो ग्यासी गोविंद ॥ येणे स्मरणे अन्य मुद्द ॥ हानि गुण अहार प्रसीदा च
कोरे गोविंद बोलीला ॥ ७८ ॥ अन्न ब्रह्म अह च ब्रह्म ॥ पतिकर तो ही ब्रह्म ॥ ऐसा ज्ञाचा भोजन अनुक्रम ॥ तो अहार पर
मनि गुणवे ॥ ७९ ॥ श्रीगुणाचे त्रीविध स्वरु ॥ निर्गुण स्वरु अती लीला ॥ साही स्वरुचा परिमाक ॥ यदुनाय कस्वयसांगे ॥ ३८ ॥
॥ श्लोक ॥ सात्त्विकं स्वरु मात्सो भं विषयो सतु हा जं सं ॥ तामसं मां ह दै न्यो थं निर्गुण मर्पा श्रयं ॥ २९ ॥
॥ टिका ॥ सातु निविषय स्वरु चि स्फुर्ती ॥ आत्म स्वरु स्वरु वे चि तट्ट नि ॥ ऐसी धानि ज स्वरु चि प्राप्ती ॥ ते स्वरु नि श्ची
तिसा लीक ॥ ८१ ॥ गंगा पुंर भरे उन्नति ॥ तेणे अमर्यादा वोत भरति ॥ ते विआत्म स्वरु या ये प्राप्ती ॥ इंदीय तू सी खानदे ॥ ८२ ॥ ना
नाविषयाचे कोडा ॥ इद्रिया चा अति धुमाडा ॥ विषय स्वरु लागे गोडा ॥ ते स्वरु सदेह राजसा ॥ ८३ ॥ अति निद्यु आणि उन्मादि ॥
तोचि स्वरु आवडे बुद्धी ॥ तामस स्वरु चि हे शुद्धी ॥ जाणनि शुद्धी उद्धरा ॥ ८४ ॥ हृदयी प्रगटल्या मासी मूर्ती ॥ विसरे संसारा
ची स्फुर्ति ॥ या वरिजे होय स्वरु प्राप्ती ॥ ते स्वरु नि श्ची ति निर्गुण ॥ ८५ ॥ सर्व भुति वसे भगवत ॥ तोचि मिहाता सी कार्थ ॥
ऐसे नि मदे क्ये स्वरु प्राप्ता ॥ ते नि ज स्वरुार्थ निर्गुण ॥ ८६ ॥ देखील्या नि जात्म स्वरु स्वरु रूप ॥ स्वयं हारिजे स्वरु रूप ॥ हे निर्गु
ण स्वरु चि नि जदिप ॥ सड ला पुण्य पाप पाविजे ॥ ८७ ॥ आपण स्वरु रूप सर्वांगी ॥ स्वरु स्वरु प स्वये भोगी हे निर्गुण स्वरु
पाचि मागी ॥ भक्ति अंतरंगी भोगी जे ॥ ८८ ॥ कल्पा ताचे पूर्ण भरिते ॥ उरोने दिन दाते ॥ जे वि निर्गुण स्वरु यथे ॥ देहे इंद्रीया
ते उरोने दि ॥ ८९ ॥ जो विमृग जकी जळ नाही ॥ ते वि पर ब्रह्माचा रौंथी ॥ प्रपंच स्पर्श त्याच नाही ॥ ते स्वरु नि वा इ निर्गुण
॥ ९० ॥ जा स्वरु चि मयादि ॥ करितान करवे कदा ॥ स्वरु स्वरु रूप होरजे सदा ॥ हे सुख सपदा निर्गुण ॥ ९१ ॥ त्रि गुण
आणि निर्गुण ॥ याचे दाविले भेद लक्षण ॥ आता याचे उपस हारण ॥ ग्रथाते जाण हरिकरि ॥ ९२ ॥ ॥ श्लोक ॥
॥ द्रव्यं देहाः फलं कालो ज्ञानं कर्म चकारकः ॥ श्रद्धा शौचं वै वस्था कृति निश्चि त्रे गुण्यः सर्व एव हि ॥ ३० ॥ ॥
द्रव्य शब्द अहार त्रिविध ॥ वास शब्द वन गाम भेद ॥ फळ शब्द स्वरु उद्धाध ॥ सत्व संबंधी विभागे ॥ ९३ ॥ काळ शब्द भगद्गुत्रन
के वल्य निष्ठा या ना ज्ञान ॥ कर्म ज्ञानी जे मर्दपण ॥ कर्ता तो जाण असगी ॥ ९४ ॥ श्रद्धा शब्द आ ध्या निष्ठा ॥ आवस्था शब्द

जागृणादिके ॥ आपरिशरे उपरितोकी ॥ देवतादिकी श्रीगुण ॥ १५ ॥ जो गुण बोटे हे संति ॥ जेणे गुणे हो
 यथेत स्थिति ॥ यानावनिष्ठा गुणती ॥ जाणनिष्ठीति उद्धवा ॥ १६ ॥ श्रीगुणान्नभाग आनेक ॥ कीति सागु रकक
 आववेजनत्री गुणात्मक ॥ जाणनिष्ठा निजभ का ॥ १७ ॥ संसार समस्त श्रीगुण ॥ यामाजीमिआवधानिगुण
 हेतुजकळाव्यानिअखुण ॥ गुणानिरूपण थाकेते ॥ १८ ॥ ॥ श्लोक ॥ सर्वगुण मयाभावाः पुरुषा व्यक्तधिदि
 ताः ॥ दृष्टं श्रुतं मनुष्यांतं बुध्यावापुरुषर्षभ ॥ १९ ॥ ॥ टीका ॥ देखीजेअथवाएकीजे कामनेजेजेचितिजे
 तितेआवेधचिजाणिजे ॥ मायागुणकीजेनिगुणात्मके ॥ २० ॥ कसव्या श्रीगुणाचेमर्दन ॥ प्रकृतिनियतापुरुषाणि
 सर्वदासर्वगिनिगुण ॥ वर्तविगुण निजसत्ता ॥ २१ ॥ पुरुषावेगळे समस्त ॥ प्रकृति कार्य मिथ्याभुता ॥ त्यांतवोकी
 जेगुणातित ॥ जाणनिष्ठी न उद्धवा ॥ २२ ॥ नरदेहपावोनि याद्यथ ॥ जेन साधीतगुणातित ॥ तेनाडले हातो हात
 निजस्वार्थबुडाला ॥ २३ ॥ तेसीनहेतुसीमति ॥ विनटलासीभगदूकि ॥ तेहाचितुगुणातिति ॥ जाणनिष्ठीतिजे
 उद्धवासी ॥ २४ ॥ हरिभक्तामधेवरिष्ट ॥ यात्रीगीनिजमुखेवेकर ॥ उद्धवासी ह्रणेपुरुषश्रेष्ठ ॥ भाग्यउकृष्टतुलका ॥
 ॥ २५ ॥ श्रीगुणानुभवेसरेकारविस्तार ॥ दृष्टवाटत्याससार ॥ याचाखेराचाकवणप्रकार ॥ तोसोरगंधरसागत ॥ २६ ॥
 ॥ श्लोक ॥ एतासंसृतयः पुंसो गुणकर्मनिबधनः ॥ येनेमेनिजिताः सोम्य गुणाजीवनचित्तजाः ॥ २७ ॥
 क्तियागेनमनिष्टे मद्रावाय प्रपद्यते ॥ २८ ॥ ॥ टीका ॥ सत्त्वादितोनीगुणयथाकेवळआणिमिश्री
 त ॥ पुरुषातेसंसारिकरित ॥ गुणकर्मीनिष्ठीतबाधोनि ॥ २९ ॥ श्रीगुणकर्मस्तिवजाण ॥ जीवासी सातेदुरुबेधन
 जेविघटांमाजीतजीवन ॥ हाविअडकेलेपणरविवीवा ॥ ३० ॥ घटीभरल्यासमन्वळ ॥ यामाजीरविदिससमळ ॥
 घटीचडोळचिजळ ॥ कोपेचळाकरविवीव ॥ ३१ ॥ ते श्रीगुणाचेकर्मचर ॥ सुद्धासीआणिजीवपण ॥ तेहदावया
 जीववधन भगदूजनसाधावे ॥ ३२ ॥ जीनावया जीववधन ॥ रिघावेसद्गुरसीशरण ॥ तथमद्रावेकरिताभजन ॥ वाठेसत्त

॥ १० ॥ ११ ॥

॥ २५ ॥

गुणअतिशुद्ध ॥ १० ॥ पायीजा इतीलो हाचिवेडी ॥ जेसो हचि लोकारतोडी ॥ जेविसत्वगुणाचि यादोडी ॥
 त्रिगुणाते तोडी सद्गुरुसो ॥ ११ ॥ तेथ प्रवे शावया गुणातिनि ॥ आवश्यकरावि गुरभक्ती ॥ जेगुरभजनि विरवा
 सति ॥ यासी चारी मुक्ति आद न्या ॥ १२ ॥ ज्यासी गुरुचरणी भगद्भावो ॥ यासी चसे वेसीये ब्रह्म सद्भावो ॥ तेथ
 ब्रह्मसंभावे सीपा हाहा ॥ मीदेवाधिदेवो सबाह्यतिष्ठ ॥ १३ ॥ जागुरुचरणि अनन्य शरण ॥ तोसहजे होयब्र
 ह्मसंपन्न ॥ गुरुरूपकरिता भजन ॥ ब्रह्मसमाधान मद्भक्ता ॥ १४ ॥ उद्धवा एसे मासे भजन ॥ समूळ जाण सीतु
 सपूर्ण ॥ यालागी सोम्यह विज्ञापण ॥ स्वमुखेश्रीकृष्ण संबोधी ॥ १५ ॥ भाग्यनरदेरुपावत्मा जाण ॥ आवश्यकरा
 वे मासे भजन येचि अर्थीचे निरूपण ॥ स्वमुखेश्रीकृष्ण सांगत ॥ १६ ॥ ॥ श्लोक ॥ तस्माद्देहमि मंलब्धा हा
 नविज्ञानसंभवं ॥ गुणसंगे विनिर्धय यमा भजंतु विचक्षणाः ॥ ३३ ॥ ॥ टीका ॥ जानरदे हाकारणे ॥ अम
 र उद्धृत मने ॥ यादहाचे जालेपणे ॥ ज्ञानपावणे निश्चक ॥ १७ ॥ नरदेहापावत्मा जाण ॥ आपणचि नदे ब्रह्मशा
 न ॥ तेथ करावे मासे भजन ॥ सहजे वाठे सत्व गुण ॥ करिता मासे अनन्य भजन ॥ सत्व गुणारतव जाण ॥ उपजे हो
 न विवक ॥ १८ ॥ विवेकज्ञानाचियेष्टति ॥ रजतमदोनि सडति ॥ मोधीत सहाची ये म्थीति ॥ अभेदभक्ति उत्तम
 से ॥ ४२० ॥ करिता मासे अने भजन ॥ होय स्वानंदाचे स्वादन ॥ यानाव बोली जे विज्ञान ॥ तेथतिनिगुण
 मुख्यत्वे ॥ २१ ॥ नरदेह जोडत्मा हाति ॥ प्राण्यासीय वळी प्राप्ती ॥ यालागी मनुषदेही भक्ती ॥ अवश्यसमक्ती
 करावि ॥ २२ ॥ हे भागवतिचे अति गुह्यज्ञान ॥ मुख्यत्वे सी अति प्राधान्य ॥ भावे करिता मासे भजन ॥ स्थि या
 श्रुज न उद्धरति ॥ २३ ॥ नरदेह जोडत्मा जाण ॥ मासी भक्ति करिति विचक्षण ॥ भजने जीनोनि गुणा गुण ॥
 ब्रह्मपरिपूर्ण स्वयहाति ॥ २४ ॥ पूर्ण ब्रह्मा चिया प्राप्ती ॥ निरपेक्ष मासी भक्ति ॥ तोचि भजन भावशीपति ॥ पुनः
 पुनः श्लोकी रुठदावि ॥ २५ ॥ ॥ श्लोक ॥ निःसंगो मां भजे हि ह्य न प्र मतो जितेंद्रियः ॥ रजस्तमश्वा
 भिजये सत्व संसवया मुनिः ॥ ३४ ॥ ॥ टीका ॥ करनि विषयाचिविरक्ती ॥ हृदयी नापेक्षावि मूर्ति कि ॥

रहाभ्यान साउनि १८

॥ ३५ ॥

ऐसी निरापेक्ष मासी भक्ती वाटल्या प्रीतिकरावि २६ ऐसे करिता मासे भजन विस्मरणासीये मरण स
र्वद्रीई सावधान ॥ सहजे जाणट सावे ॥ २७ ॥ तेणे आनिवार सत्व शुद्धी ॥ सर्वभूती भगवुद्धी ॥ दृढ वाटे मात्रि शु
द्धी ॥ हे भजन सीधी सातीका ॥ २८ ॥ तेकार जतमदो निगुण ॥ निःशेष जाति हारपोन ॥ शुद्ध सत्वाचे स्फुरण ॥ ते
णे स्वानंद पूर्ण साधका ॥ २९ ॥ केवळ उरल्या सत्व गुण ॥ साधका ऐसे स्फुरे स्फुरण ॥ जगमा जी एक पावेन ॥ धन्य
धन्य मिहाय ॥ ३० ॥ मी पावलो शुद्ध बोध ॥ मज प्रगटला परमानंद ॥ ऐसा सखाचा जो स्फुंद ॥ तो सत्व बोध साधका
॥ ३१ ॥ ऐसा उरला जो सत्व गुण ॥ तो निवारा वया साधन काण ॥ मी स्वयं सख स्वरूप आपण ॥ मज सखाचे स्फुरण
ते माया ॥ ३२ ॥ गुळगुळा गोड पण पांगे ॥ कीदुधा दुध गोड लागे ॥ ते सा सखरूप मिसर्वांगे ॥ वृथा सख भोगे काफ जे
॥ ३३ ॥ ऐसीया साधकी स्फुर्ति स्फुरे ॥ तव सत्व गुण स्वरूपि उरे ॥ ते का सखाचि ही फुंज सरे ॥ सहजे सख उरि जे सा
ती ॥ ३४ ॥ ऐसे निवारला ति निगुण ॥ केवळ उरे निर्गुण ॥ तेचि आधीचे निरूपण ॥ विषद श्री कृष्ण सांगत ॥ ३५ ॥ ॥
प्रसादे ॥ संपद्यते गुणे मुक्ता जीवा जीवे विहाय माम् ॥ जीवो जीव विनिर्मुक्ता गुणे भवत्येव सत्तवेः ॥ ३६ ॥
॥ टीका ॥ वाटल्या सत्व गुणाचा हरि रस ॥ त्याते निर्दळी शुद्ध सत्व विवेक ॥ पाटि विवेके सी सत्व देख ॥ हारपे नीः शरणि जा
मिरूपि ॥ ३६ ॥ ऐसे निमात्मा ति निगुण ॥ निमे कार्य कर्म कारण ॥ त्नीं गदे हनाशे सपूर्ण ॥ जीवासी जीवपण मिथ्या हो
या ॥ ३७ ॥ ते का कार्य कर्म कर्ता ॥ भोग्य भोग आणि मोक्ता ॥ ज्ञान जय मीय कलाता ॥ याची वात उासेना ॥ ३८ ॥ ऐसे
हारपल्या जीवपण ॥ स्वये सहजे निर्गुण ॥ हो उनिटाके ब्रह्म पूर्ण ॥ अहंसाहं पण सांडुनि ॥ ३९ ॥ यापरि मद्रक्त जा
ण ॥ ब्रह्म होती परिपूर्ण ॥ तेचि जाले पणाचे लक्षण ॥ श्रेय कार्य श्री कृष्ण सांगत ॥ ४० ॥ ॥ श्लोक ॥ मयैव
ब्रह्मणा पूर्णो न वहिर्नातरस्यरेत् ॥ ३६ ॥ इति श्री भागवते एकादश स्कंदे पंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥ ॥
टिका ॥ प्रपंच एक पूर्वि होता ॥ हस मूळ मिथ्या वाता ॥ पुढे होईल मा गुता ॥ ब्रह्मनिर्वाग निजानंदे ॥ ४१ ॥ ऐसे पाव

लया अत्र परिपूर्ण ॥ साधकासी नयमरण ॥ प्रारब्धो देह उरत्मा जाण ॥ देहाभीमान बाधीना ॥ ४३ ॥ बाह्य नदेखे दृश
 दर्शण ॥ अंतरिना ही विषय स्फुरण ॥ देहीचे नदेखे देहपण ॥ जीवनमुक्त लक्षण यानाव ॥ ४४ ॥ बाह्यदेखे दृशप्रति
 अंतरि विषयाची असती ॥ यानोव उगा होनाचि स्थीति ॥ अविद्याशाकी बाधक ॥ ४५ ॥ ते निरसावया अविद्याबंधन ॥ अ
 वश्यक रावे मासे भजन ॥ हे जाणोनि साधुसज्जन ॥ भक्तीसी प्राणविक्रिती ॥ ४६ ॥ माहीयभक्तीपरति ॥ आपिकुना ही
 उत्तमगति ॥ ते ही भजन अभेद युक्ती ॥ ते च्यारि मुक्ति कामाया ॥ ४७ ॥ दृष्टीविषयाचि विरक्ती ॥ विरिअभेद भावे माही
 भक्ति ॥ ते भजन अन्यप्रीति ॥ त्याचा मी श्रीपति अज्ञाधार ॥ ४८ ॥ भक्तीनामाचा इत्यर्थ ॥ मासे स्वरूपिनि जभावार्थ ॥ येणेचि
 त्यासे परमार्थ ॥ सकळ शास्त्रार्थ यानाव ॥ ४९ ॥ माहीये भक्तीचे निनावे ॥ पशुपक्षी उद्धरावे ॥ मामोनावि भजन भावो म्या
 आवश्य न्यावे निजधामा ॥ ५० ॥ यात्मागी सांडोनि विलिखति ॥ जाणति नेणति मासमस्ती ॥ भावे करावि भगद्धर्क ॥ ते निजा
 त्म प्राप्ती आनायासे ॥ ५१ ॥ भावे करिता मासे भजन ॥ स्वपनिदळति तीकी गुण ॥ सहजे प्रगटे विजनिगुण ॥ हे सस जाण
 श्रीकृष्ण बोलीला ॥ ५२ ॥ जेथ उगवती गुण गुती ॥ तेथ प्रगटे निजरांति ॥ हेचिये आध्यायी श्रीपति ॥ उद्धवा प्रतिवालीला
 ॥ ५३ ॥ यात्मागी जेथ भगद्धर्क ॥ तेथ गुण जयोत्माभेदति ॥ सहजे प्रगटे निजरांति ॥ निजात्मा प्राप्ती स्वतसीद्ध ॥ ५४ ॥ ते
 नीजे भक्ती माही जमनि ॥ ज्यापैटाके लोक जनार्दनि ॥ येका जनार्दन चरणी ॥ मीजे निमीळनि भजनचि ॥ ५५ ॥ पुढील उगा
 यायी कथा गहण ॥ एल उर्वशी उपाख्यान ॥ जा आध्यायाच करिता पठण ॥ आगम्यागमन दोषहरति ॥ ५६ ॥ ज्यापुस
 रव्याचि विरक्ती ॥ स्वमुखे वर्णी श्रीपति ॥ वैराग्यनि जालम प्राप्ती ॥ सभाग्यपावति वैराग्य ॥ ५७ ॥ या वैराग्याचे निरूपण ॥ अ
 तिगोड निरुपि श्रीकृष्ण ॥ श्राता कृपा करावि पूर्ण ॥ यावे आवधान कथेसी ॥ ५८ ॥ जे कथेचे नि आवधाने ॥ दुरित दोष हो
 तिदहणे ॥ ब्रह्मी ब्रह्मतपावने ॥ होउनि राकणाचि न्मात्र ॥ ५९ ॥ ये वठपानि रूपणाचि गोडी ॥ पुढील आध्यायी आहो फुडी ॥
 एका जनार्दने कृपा गाडी ॥ परापरथडी प्रापक ॥ ६० ॥ भावे धरिता जनार्दन चरण ॥ बाधुन शके बाधकपण ॥ एका जनार्द
 ना शरण ॥ रसावनि रूपण पुढे आह ॥ ६१ ॥ इति श्रीभागवते महापुराणे एकादशा स्कंधे श्रीकृष्ण उद्धव संवादे
 शुणनिगुण निरूपणे नाम पंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ ॥
 मूळश्लोका ॥ ३६ ॥ ॥ नोव्या ॥ ४६ ॥ ॥ एवे सरव्या ॥ ४७ ॥ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥